आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" जुलाई 2026

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –28 । अंक–7 । अषाढ़/श्रावण – स.2083 । जुलाई 2026

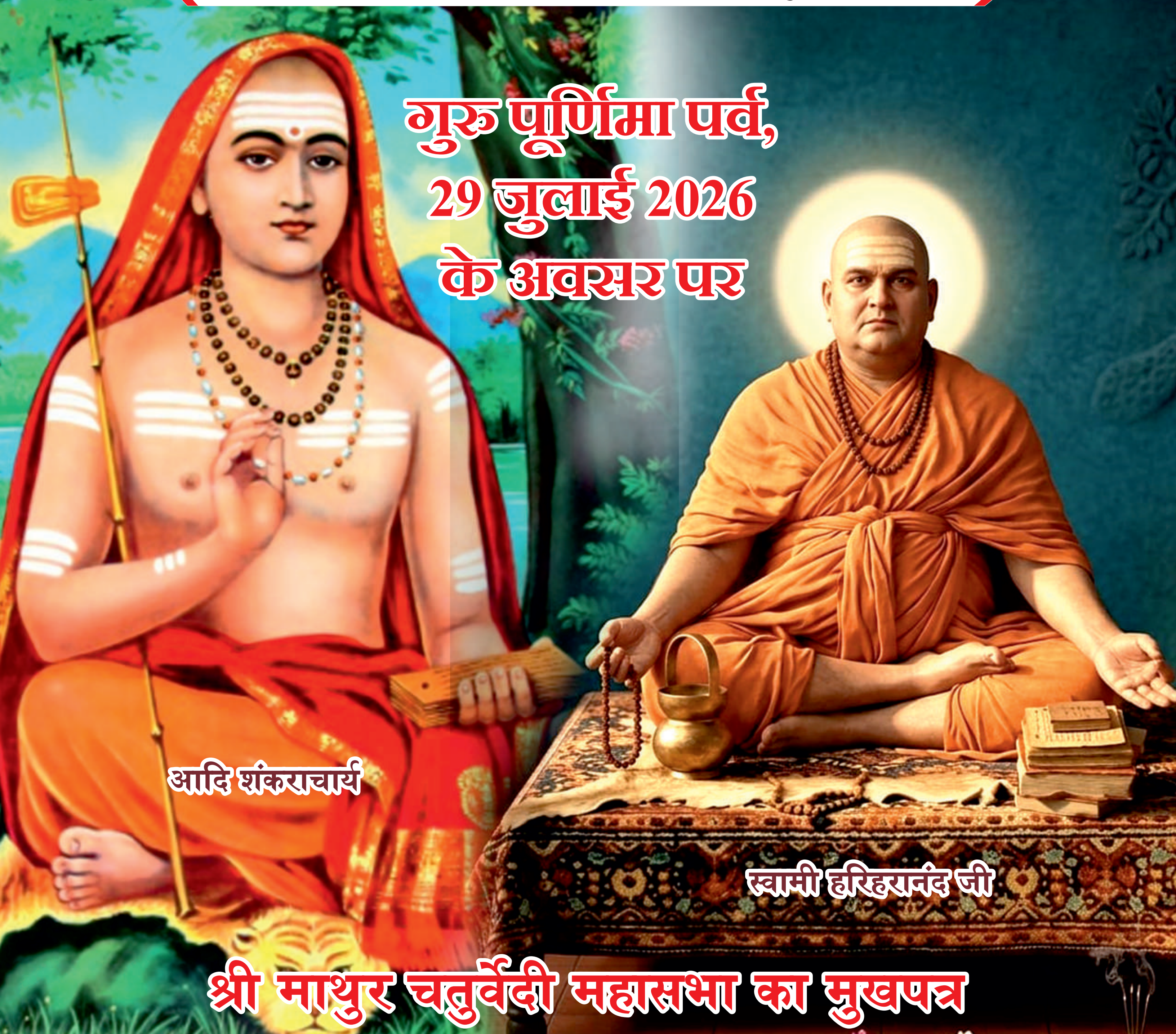

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

चतुर्थ पुण्य-तिथि

स्व. श्री नील रत्न चतुर्वेदी : सुपुत्र स्व. श्री श्रीकृष्ण चतुर्वेदी
कमतरी : आगरा
जन्म - 22 अगस्त 1939 : अवसान - 04 जुलाई 2022

आप की चतुर्थ पुण्य-तिथि पर हम आपको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कोटि कोटि नमन करते हैं।

आप की मधुर स्मृति, स्नेह, आदर्श, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद सदैव हमारे प्रेरणा -स्त्रोत रहेंगे।

श्रद्धावनत

श्री श्रीकृष्ण बाबा परिवार **श्री श्याम सुन्दर बाबा परिवार** **श्री हरिचरण बाबा परिवार**

पत्नी : स्व. श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
पुत्र - पुत्रवधु : तरुण-निधि (नेहा), नीरज-प्रीती (मेघा)
नातिन - नाती : निष्ठा, नमन, सार्थक

निवास
107, पुष्पाँजलि टावर एक्सटेंशन, देहली गेट, आगरा (उ.प्र.) 282002
सम्पर्क : 9927100240 / 9650022838

(र.क्र. 202647)

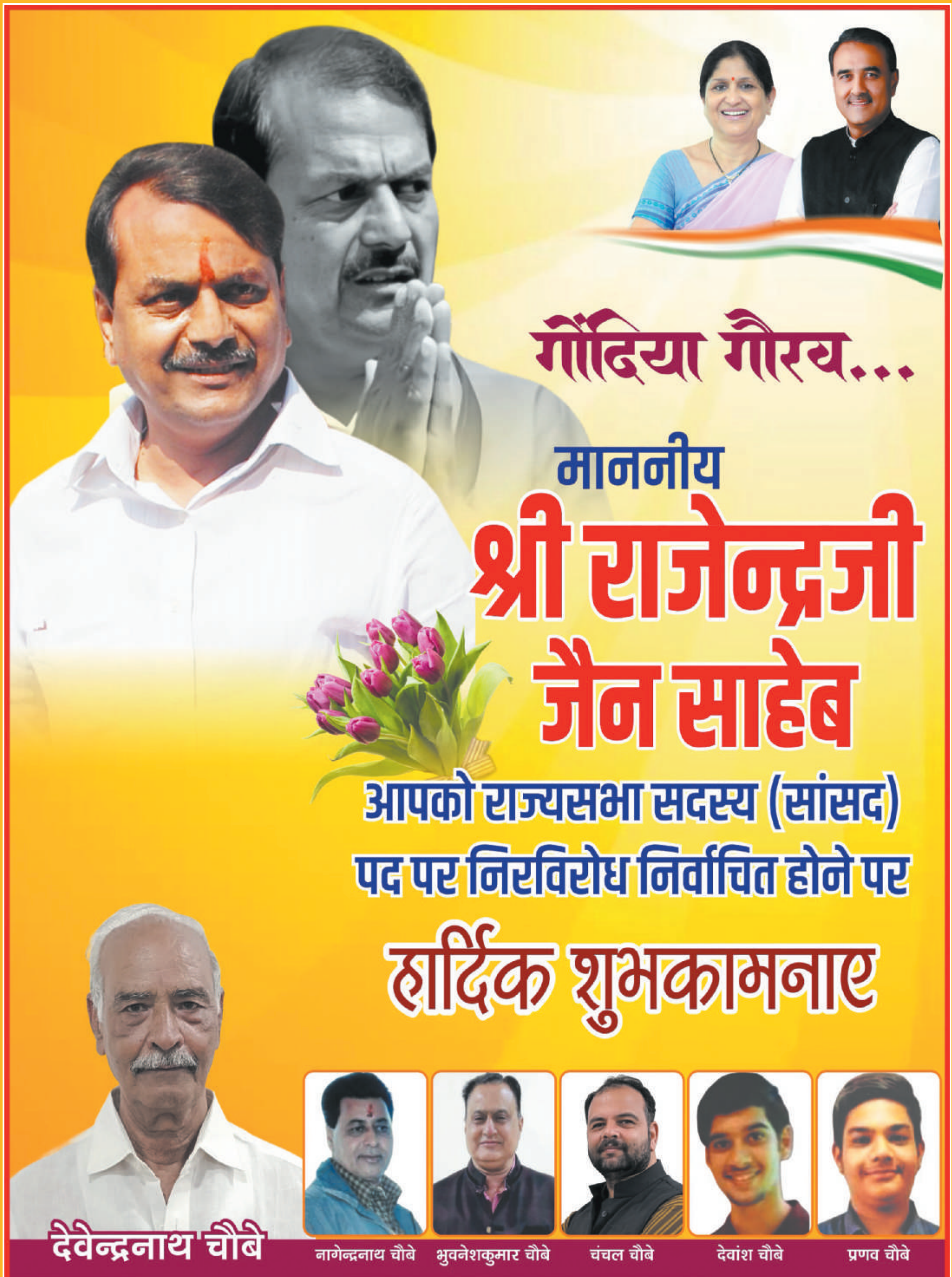
गोंदिया गौरव...
माननीय
श्री राजेन्द्रजी
जैन साहेब
आपको राज्यसभा सदस्य (सांसद)
पद पर निरविरोध निर्वाचित होने पर
हार्दिक शुभकामनाए
देवेन्द्रनाथ चौबे
नागेन्द्रनाथ चौबे
भुवनेशकुमार चौबे
चंचल चौबे
देवांश चौबे
प्रणव चौबे

(र.क्र. 202680)

रेखा गॅस
एजन्सी

"समय के पाबंद, विचारों से समृद्ध और व्यवहार से सभी के प्रिय..."
आपकी अनुशासनप्रियता, सादगी और
प्रेरणादायी व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

आदरणीय श्री दिलीप चौबे सर को
जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ!

– आपके चाहने वाले, मित्रपरिवार एवं सहकर्मी

दु.नं. 109, खान्देश मलि शॉपगि कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001

MIDC आउटलेट : X9, MIDC, मेरिको जवळ, सेठीया ट्रान्सपोर्ट जवळ, जळगाव.

(0257) 2221095 2221195 2225195 | 2228495.

malhar.org

(र.क्र. 202648)

शांति प्रमोद समर्थ एवं योग्यता छात्रवृत्ति निधि

मेरे पूज्य माता पिता **स्व. प्रमोद चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती शांति चतुर्वेदी** की स्मृति में चतुर्वेदी छात्र छात्राओं हेतु आर्थिक सामर्थ योग्यता आधारित छात्रवृत्ति प्रदान करने की योजना है। पूज्य स्व. श्री प्रमोद चतुर्वेदी ने अपने जीवन काल में अनेक छात्रों को आर्थिक सहयोग दिया था।

इस योजना में योग्य जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को इंजीनियरिंग/मेडिकल शिक्षा के लिए प्रवेश लेने पर यह सहायता/छात्रवृत्ति देने की योजना है। इस हेतु दो स्नातक इंजीनियरिंग/मेडिकल छात्र छात्राओं को प्रथम वर्ष की ट्यूशन फीस का 50 प्रतिशत जिसकी अधिकतम सीमा 50,000 रुपये तक प्रति छात्र को दी जा सकेगी।

योग्यता मापदंड ::- वे छात्र छात्रा जो निम्न योग्यता मापदंड को पूरा करेंगे आवेदन कर सकते हैं:

1. जिनके अभिभावक की वार्षिक आय 5,00,000/- रुपये से अधिक न हो।
2. वे छात्र छात्रा जो इंजीनियरिंग/मेडिकल स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश ले रहे हैं।
3. जिन छात्रों ने 12वीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित किए हैं।
4. वे छात्र/छात्रा जिन्हें किसी अन्य माध्यम यथा केंद्रीय/राज्य सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम से आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। वह इस योजना के पात्र नहीं होंगे।

इच्छुक छात्र/छात्रा मेल आई. डी. - smisra1958@gmail.com
पर आवेदन कर सकते हैं।

श्री संजय मिश्र

फ्लैट न. 2001 क्रीप्टोन टॉवर, न्यू प्रभादेवी रोड,
प्रभादेवी, मुंबई (महाराष्ट्र) - 400025
मोब. - 9810607145, 9987787145
मेल आई.डी.- smisra1958@gmail-com

(र.क्र. 202638)

श्रद्धांजलि

हमारे परिवार की प्रिय बहू **महिमा**
(धर्मपत्नी चिरंजीव प्रशांत),
निवासी चंदवार/फतेहगढ़ (उ.प्र.),
प्रवासी भोपाल,
अपने वैकुंठ धाम गमन पर
१० जून २०२६ को चली गई।

ईश्वर से प्रार्थना है कि
दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे और
अपने श्रीचरणों में स्थान दे।
हम सब परिवार जन उनकी
सदगति की कामना करते हैं।

प्रिय महिमा, अमर और अजर रहेंगी
और उनकी मधुर स्मृतियाँ
हमारे हृदय में सदैव बसी रहेंगी।

शोकाकुल

सिकंदरपुर परिवार

धनश्याम दास, किरण (माता पिता)-
देवेंन्द्र कुमार
अमय
आलोक
सतीश
मुकुंद
बैभव
अभिषेक
प्रगल्य
नेवेद्य
पार्थ
अनुपम

चंदवार / फतेहगढ़ परिवार

स्नेह रश्मि
विष्णुप्रांय, मुदुला
अविनाश, नीना; अरुण, रागिनी
विवेक, पुजा;
देवेंन्द्र, शालिनी
प्रशांत
अपूर्व, काव्या;
वरुण, ऋतुप्रिया
अक्षत
आन्वत
माधव (पुत्र)
प्रियांशी (पुत्री)

Address: Lt Gen V K Chaturvedi, PVSM, AVSM, SM (Retd.),
I 601, Vivek Vihar, Sector 82, Noida

Mobile: 9958700511

Prashant Chaturvedi (Bhopal)- 9009082888 mo

(र.क्र. 202681)

चतुर्वेदी चंद्रिका

अपनों से अपनी बात	9
संपादकीय	10
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा	11
गुरु पूर्णिमा	13
आदि शंकराचार्य-धर्मगुरु	15
स्वामी हरिहरानंद तीर्थ	16
यमुना को भी आना पड़ेगा	17
मुक्ति धाम (मुक्तिनाथ) नेपाल की यात्रा....	18
केदारनाथ के शिवलिंग का आकार क्यों है त्रिकोणीय ?	19
गृहणी का औषधालयःमसालदान	20
व्यथा पैंट शर्ट पीस की	22
किस्सागोई	24
सलोना -आम का अचार	25
ग्रामीण लोक रचनाएं	27
शाखा समाचार	28
व्यवसाय एवं उद्योग	29
समाज समाचार	30
बिछड़े स्वजन	30

अंक 7
जुलाई 2026, वर्ष - 28

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पताः
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak2024.chandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED

BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण प्रभारी : **विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094**

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक:- डा० सतीश जी(नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल,श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे(पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी(नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता),श्री भरत कुमार जी (रिषड़ा),श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा), दिलीप जी, (फिरोजाबाद).

सभापति:- श्रीमती ऊषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरूग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करूणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरूग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी(गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), डा० राकेश जी (मथुरा),श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई),श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चैन्नई), श्री हितेष जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरूण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा,छ०ग०), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा), श्रीमती शिवांगी जी, भोपाल, श्रीमती अनुपमा जी, नोएडा

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर) , श्री पदम जी (लखनऊ), श्री अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली) , श्री दिनकर राव जी (फरौली), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर), अतुल जी (फिरोजाबाद).

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कौशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उचाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (भिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ),श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री अनुराग जी (गुरूग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छौना'(फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर), श्री नलिन जी, (नोएडा), श्री हरीश जी, (भोपाल), नमन जी, लखनऊ

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णु कांत जी नोएडा, 2) श्री पंकज जी, मुंबई 3) श्री प्रदीप जी, लखनऊ 4) श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5)श्री सुनील जी, जयपुर 6) श्री विनय जी, कोटा 7) श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 9) श्री प्रदीप जी,गाजियाबाद 10) श्री सुशील जी, फरीदाबाद 12) श्री मुकेश जी,आगरा (रजि.) 13) श्री संजय जी, अहमदाबाद 14)श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी,समाज,फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18) श्री शैलेंद्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी, देहरादून 20) श्री राजेन्द्र जी, फर्रुखाबाद सभा, 21) श्री एम. बाबू, मैनपुरी सभा, 22) श्री समीर चतुर्वेदी, पटना सभा, 23) नागपुर सभा, 24) दिलीप चतुर्वेदी, हरिद्वार सभा 24) नृपेंद्र जी, फिरोजाबाद, 25) श्रीमती नीलम पाठक जी, भोपाल सभा

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री नमन जी (फिरोजाबाद), उपसंयोजक

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मम्बई)

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ : अरविंद चतुर्वेदी दिल्ली संयोजक, संजय चतुर्वेदी फरीदाबाद

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ:- अजय चौबे, भोपाल

महिला प्रकोष्ठ:- श्रीमती शिवांगी जी (संयोजक), श्रीमती अनुपमा जी (उप संयोजक)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

● ऊषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

नजर से नजरिया का, स्पर्श से नियत का,
भाषा से भाव का, बहस से ज्ञान का का,
व्यवहार से संस्कार का, पता चल ही जाता है

आदरणीय बंधुवर/भगिनी

सादर पालागन, आशा है आप सभी बंधु एवं भगिनी अपने परिवार सहित स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे। ईश्वर से यही विनती समाज स्वस्थ प्रसन्नचित एवं विकास करता रहे। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की आभासी (जूम पर ऑन लाइन) बैठक दिनांक 7 जून को संपन्न हुई। विपरीत मौसम में फिजिकल बैठक करना संभव नहीं था। बैठक में उपस्थित उत्साह जनक रही तथा समस्त कार्यकारिणी का सहयोग प्राप्त हुआ धन्यवाद एवं आभार। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी जी को बधाई प्रेषित करती हूं, जिन्होंने परिश्रम कर महासभा की वेबसाइट का निर्माण कराया। बैठक में सर्वप्रथम उसी का लोकार्पण किया गया। वेबसाइट देखकर आप लोगों के सुझाव आमंत्रित हैं एवं चतुर्वेदी चंद्रिका के लिए भी आपका लेखिकीय सहयोग की आवश्यकता है। संरक्षक आदरणीय श्री संतोष चौबे एवं विनीता चौबे को शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित करती हूं। भोपाल में सामाजिक कार्य हेतु एक भवन का निर्माण चतुर्वेदी निवास का लोकार्पण अपनी वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष में किया। बधाई। निश्चित ही मेरी भावना है यह भवन सामाजिक कार्यों के लिए सभी को उपलब्ध रहेगा।

हमारे समाज की ही एक मां एवं एक पत्नी अपने पुत्र एवं पति की जीवन रक्षा के लिए आर्थिक संकट से जूझ रही है और आशा भरी निगाहों से समाज की ओर देख रही है। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की सभापति होने के नाते मैं समाज से अपील की है सामाजिक एकता बनाए रखने के लिए आवश्यक है, अपनी सामर्थ्य के अनुसार आर्थिक सहयोग दें। परिवार जब बड़ा होता है तो मत भिन्नता हो जाती है लेकिन यह समय उस पर टिप्पणी करना अनुचित है। दो दिन से मैं निरंतर सारे ग्रुपों को देख रही अपने सामाजिक लोगों की टिप्पणी पढ़कर मन दुखी हुआ। चाय से ज्यादा केतली गर्म है। मैं सभी को बता देना चाहती हूं कि महासभा ने विशेष सहायता निधि एकत्र करना प्रारंभ कर दिया था। काफी समय पहले से ही श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संरक्षकगण श्री सतीश चतुर्वेदी जी आ0 विकास जी चुन्ना भैया जी, आ0 त्रिभुवन जी भाई साहब, आ0 डॉ. प्रदीप जी एवं अन्य बॉधवों के सहयोग से राशि एकत्र हुई। इस राशि में से जिनको महिती आवश्यकता थी उनको महासभा ने दिया। महासभा कोई व्यक्ति नहीं आप सभी लोगों का समूह ही है। आपसे आर्थिक सहयोग लेकर जो भी योजना संचालित हो रही है उसी में व्यय किया जाता है। उन सभी का मैं स्वयं आभार मानती हूं, जो निरंतर अन्नपूर्णा एवं विशेष सहायता निधि के लिए आर्थिक सहयोग दे रहे हैं। उस संवेदनशील व्यक्ति का विशेष आभार जिन्होंने 4,00,000 रुपये पूर्व में गोपनीय दान दिया था। यह सब बहुत दुखी मन से आपके सामने लिख रही हूं, ऑडिट होता है। चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित होता है। उसका अवलोकन सभी करते हैं। आर्थिक सहयोग देने वालों के नाम भी विभिन्न ग्रुप तथा चतुर्वेदी चन्द्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं। राशि की रसीद भी उसे व्यक्ति के पास पहुंचाई जाती है। आप सभी लोगों से मैं पुनः आग्रह करती हूं आपका सहयोग महासभा की योजनाएं संचालित करने के लिए परम आवश्यक है। मेरी बात अनुचित लगी हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूं,लेकिन समाज के भ्रम को दूर कर देना चाहिए। महासभा के आय का स्रोत आपका आर्थिक सहयोग ही है। सामाजिक एकता एवं संवेदनशीलता का परिचय देते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार आर्थिक सहयोग करते रहेंगे। महासभा का सदस्यता अभियान प्रारंभ हो चुका है सभी लोगों से अपील करती महासभा के आजीवन सदस्य बन महासभा के विकास एवं विस्तार में सहयोग दें। सदस्यता हेतु एक समिति का गठन किया गया है। वह निश्चित ही अपने नए आयाम स्थापित करेगी। इस बीच हमारे बहुत से परिवारजन हम लोगों से बिछड़ कर अनंत आकाश में विलीन हो गए उन सभी पवित्र आत्माओं के लिए ईश्वर से प्रार्थना है अपने चरणों में स्थान दे तथा परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें। मैं महासभा एवं स्वयं अपनी ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। शेष फिर मिलेंगे अगले अंक में।

सादर पालागन सहित

दिलीप सिकंदरपुरिया

संपादकीय

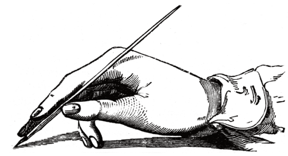

आदरणीय बंधुवर सादर पालागन एवं हार्दिक अभिनंदन।

रविवार 7 जून 26 को महासभा कार्यकारिणी की आभासी बैठक आयोजित हुई, जिसमें कोषाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र जी ने

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा.इन वेबसाइट का लोकार्पण किया, जिसके लिए उनके परिश्रम व प्रस्तुति को हार्दिक शुभकामनाएं। लेकिन वेबसाइट के लोकार्पण का उद्देश्य तभी सफल होगा,जब समाज के अधिकांश सदस्य विशेषकर युवा पीढ़ी इसका उपयोग करें। युवा वर्ग की भागीदारी बढ़ाने के लिए आनलाइन प्रतियोगिताएं, नियमित वेबिनार एवं कैरियर मार्गदर्शन का भी आयोजन किया जा सकता है। अन्नपूर्णा योजना एवं विशेष सहायता हेतु आर्थिक सहयोग समाज के एक वर्ग से ही मिलता है, जबकि सभी मानते हैं कि अन्नपूर्णा योजना हेतु दो हजार सगुन मात्र है, बूंद बूंद से सागर बनता है, तो समाज के सभी संभ्रांत सदस्यों से विनम्र निवेदन है यथासंभव सहयोग नियमित रूप से करने का प्रयास करें, जिससे इस राशि को बढ़ाकर पांच हजार किया जा सकें। महासभा समाज की आभारी हैं, जब भी कोई आपातकाल आया तो आवश्यक सहयोग प्राप्त होता है। चंद्रिका का निरन्तर प्रकाशन एवं वितरण भी समाज का उचित सहयोग मांगता है। पत्रिका प्रकाशन विज्ञापन सहयोग से ही संभव है, यदि सभी संभ्रांत सदस्य ध्यान दें तो शायद विज्ञापन का आग्रह नहीं करना पड़ेगा।

ऐसा लग रहा है कि केवल आर्थिक सहयोग की ही बात हो रही है। कहा भी जाता है –

पैसा खुदा तो नहीं, लेकिन खुदा से कम भी नहीं

लोकतंत्र में संख्या बल का बहुत महत्व है,एक बार एक माननीय चतुर्वेदी सांसद से लोगों ने पूछा –

आप समाज के लिए कुछ नहीं कर सकते ??

उन्होंने तपाक से कहा

हमारी संख्या कितनी है या हमारा कोई बड़ा संगठन भी नहीं है।

लोग पूछते है कि महासभा सदस्यता बढ़ाने से क्या होगा ??,आज राजनीतिक फलक पर जातिवाद एक बड़ी ताकत बन गया है। हमारा संख्या बल तो ताकत बन नहीं सकता, लेकिन हमारा सामाजिक स्तर एवं मनोबल संगठित होकर एक राजनीतिक शक्ति बन सकता है, जिसके लिए एक मजबूत महासभा जैसा संगठन पहला कदम हो सकता है, जिसके लिए महासभा की सदस्यता बढ़ाने के लिए अभियान चलाया जाएं तो शायद 2029 के चुनाव मे कोई चतुर्वेदी बांधव उम्मीदवार घोषित किया जा सकें।

कार्यकारिणी बैठक में अध्यक्षा उषा जी ने सबसे अधिक जोर सदस्यता बढ़ाने पर दिया, इसके लिए एक समिति का गठन भी किया गया है, लेकिन श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा को एक सामाजिक एवं राजनीतिक शक्ति बनाने के लिए हमको स्वयं सक्रिय होकर सदस्य बनना होगा और सभी को सदस्य बनाने का प्रयास करना होगा।

पुनः सभी बांधवों से विज्ञापन,लेख एवं प्रतिक्रिया आमंत्रित हैं।

आषाढ़ी अष्टमी,पुरी रथ यात्रा एवं गुरु पूर्णिमा पर हार्दिक शुभकामनाएं।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

आभासी बैठक

दिनाँक 7 जून 2026

रविवार दिनाँक 7 जून 26 को श्री महासभा कार्यकारिणी की ज़ूम मीटिंग आहूत की गई। बैठक का शुभारंभ संरक्षक भरत जी एवं अध्यक्षा उषा जी द्वारा दीप प्रज्वलित कर देवी महाविद्या एवं चर्चिका देवी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। इसके बाद लोकेन्द्र जी ने मंगलाचरण किया। फिर मंत्री शशांक जी ने मीटिंग का संचालन लेते हुए विगत मुंबई मीटिंग के कार्यवृत्त का वाचन किया। जिसे सभी ने सर्वसम्मति से पारित कर दिया।

इसके बाद कोषाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र जी ने महासभा की वेबसाइट....

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा. इनका लोकार्पण करते हुए विस्तृत जानकारी दी। सभी ने करतल ध्वनि के साथ ज्ञानेन्द्र जी को बधाई दी। वेबसाइट पर चर्चा में संरक्षक भरत जी, डॉ प्रदीप जी, देवेन्द्र जी,सभापति श्रीमती उषा जी,मंत्री -शशांक जी, उपसभापति मुनीन्द्र जी (नोयडा), विनोद जी (गुरुग्राम) के साथ ही सहमंत्री-आशुतोष जी,अभयराज जी, एवम संजय मिश्रा जी(कानपुर), समीर जी (देहरादून),अनुराग जी (आगरा), विशाल जी (दानपुर), प्रमेन्द्र जी (ग्वालियर) ने उपयोगी सुझाव जैसे वेबसाइट पर महासभा संविधान, सभी सभापति, मंत्री, सम्पादक की जानकारी, शादी योग्य युवक-युवतियों की जानकारी, साथ ही सभी संबंध शाखा सभाओं के अध्यक्षों के नाम के पते व फ़ोन न. की उपलब्धता के साथ अपने संस्कारों से संबंधित जानकारी देने का आग्रह किया। ज्ञानेन्द्र जी ने बताया कि इसमें कुल क्रमागत, आजीवन,सत्र सदस्यों की जानकारी दी गई है। यदि किसी को भी संशोधन करना हो तो आधार कार्ड कापी के साथ उन्हें सूचित करें। भविष्य में वेबसाइट के संचालन हेतु तीन सदस्यी समिती का गठन किया। जिसमें जिसमें सभापति ऊषा जी, मन्त्री शशांक जी व कोषाध्यक्ष ज्ञानेंद्र जी होंगे। इस पर संरक्षक डॉ. प्रदीप ने कहा कि विवादों से बचने के लिए भविष्य में आवश्यकता अनुसार समिति के सदस्य को जोड़ लिया जाएगा। श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संविधान अनुसार कार्यकारिणी सदस्यों में संशोधन सर्वानुमती से किया जाय। इसे सदन सर्वसम्मति से पारित किया। बॉक्स में पता परिवर्तन की सूचना को अलग से दी जा सकेगी।

इसके बाद सम्पादक दिलीप जी ने पत्रिका की प्रगति पर चर्चा शुरू करते हुए सभी कार्यकारिणी सदस्यों से चंद्रिका में विज्ञापन एवं प्रकाशन सामग्री हेतु आग्रह किया। कोई सुझाव या सहयोग की बात नहीं हुई, लेकिन सदैव की भांति पत्रिका वितरण पर ही चर्चा अटक गई। मनीष जी (लखनऊ) ने बताया कि जबसे उन्होंने पोस्ट आफिस से सम्पर्क किया, तभी से पत्रिका निरन्तर मिल रही है।नवीन जी, संजय जी (लखनऊ) ने उनका समर्थन किया। अभयराज जी ने बताया पीडीएफ से पढ़ने में दिक्कत होने पर प्रिंट आउट ले लेते हैं, अन्य लोग भी ऐसा कर सकते हैं। बताया गया कि रजिस्ट्री बन्द होने से अब स्पीड पोस्ट से ही पत्रिका भेजी जा सकती है। जिसके लिए 1200/ रु प्रति वर्ष देना होगा। इसी बीच संरक्षक महेश जी ने तल्ख लहजे में पत्रिका के प्रकाशन संख्या एवं वितरण पर प्रश्नवाचक सवाल उठाते हुए कोरियर कंपनी से वितरण पर जोर दिया। डॉ. प्रदीप जी ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि संरक्षक द्वारा पत्रिका के प्रकाशन एवं वितरण पर प्रश्न चिन्ह लगाना उचित नहीं है। मुनीन्द्र जी ने बताया कि संविधान में वितरण सरकारी माध्यम से करने की बाध्यता है, अतएव कोरियर सेवा संभव नहीं है।

इसके बाद अध्यक्षा उषा जी ने महासभा सदस्यता अभियान को पुनः जोर शोर से चलाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि फिरोजाबाद मीटिंग में सदस्यता अभियान समिति का गठन किया गया था। जिसके संयोजक आशुतोष जी (कानपुर) है। उसके सदस्य सर्वश्री संजय मिश्रा (कानपुर), नवीन जी (लखनऊ), अभिषेक जी (ग्वालियर), प्रदीप जी (गाजियाबाद),मधुपम जी (मुंबई),खगेश जी (कोलकाता), संजय जी (फरीदाबाद), हितेश जी (पुरा) है। इसमें सहयोग हेतु आशुतोष जी को भी अन्य लोगों को आवश्यकता अनुसार जोड़ने का प्रावधान है। उषा जी ने आगे कहा कि समिति के सदस्य तो अपना काम करेंगे, लेकिन हम सबको भी महासभा सदस्यता बढ़ाने का बीड़ा उठाना होगा। उन्होंने आगामी बैठक में सर्वाधिक सदस्य बनाने वाले व्यक्ति का विशेष सम्मान महासभा द्वारा किया जाएगा की घोषणा की।

डॉ प्रदीप जी ने गुगल सदस्यता फार्म लागू करने का सुझाव दिया। उषा जी ने इसका समर्थन करते हुए ज्ञानेन्द्र जी से आवश्यक कार्रवाई करने को कहा। इसके बाद ज्ञानेन्द्र जी ने बताया कि 49 परिवारों को अन्नपूर्णा एवं अन्य सहायता के लिए रु 3,16,500/- प्रति तिमाही भेजी जाती है, लेकिन जुलाई माह के लिए आवश्यक फण्ड नहीं है,जिस पर अध्यक्ष एवं मंत्री ने सभी उपस्थित बांधवों

से आवश्यक योगदान की अपील की, जिस पर उत्साह वर्धन करते हुए लोगों ने तुरंत योगदान दिया।

जिसका विवरण संलग्न है।

संरक्षक डॉ प्रदीप जी ने संबोधित करते हुए ज़ूम मीटिंग के सफल आयोजन के लिए अध्यक्षा उषा जी, मंत्री शशांक जी, कोषाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र जी को बधाई देते हुए वेबसाइट के लोकार्पण के लिए ज्ञानेन्द्र जी का विशेष आभार व्यक्त किया। उन्होंने किसी सदस्य द्वारा अन्नपूर्णा योजना से लाभान्वित लाभार्थी परिवारों की जानकारी व नाम बताना संभव नहीं है। यह महासभा की एक उच्च समिति द्वारा निर्णय लिया जाता है।

संरक्षक देवेन्द्र जी ने सदन को बताया कि संरक्षक सतीश जी (नागपुर) के सुपुत्र श्री दुष्यंत जी (नागपुर) को पुनः निर्विरोध एम. एल.सी. निर्वाचित हुए हैं। जिस पर सदन ने करतल ध्वनि के साथ दुष्यंत जी को बधाई दी। अंत में अध्यक्षा उषा जी ने मीटिंग में सभी से सदस्यता अभियान को सफल बनाने का आग्रह किया। उन्होंने त्वरित योगदान करने वालों को धन्यवाद देकर आभार व्यक्त किया। उन्होंने समाज के सदस्यों से यथासंभव रु 5100/ प्रतिवर्ष सहयोग करने का अनुरोध किया। उषा जी ने आगे कहा कि हमारा आग्रह 5100/का है, लेकिन सभी अपनी इच्छानुसार निरन्तर योगदान अवश्य करते रहे। उन्होंने महासभा से सम्बद्ध शाखा सभाओं से कार्यकारिणी बैठक आयोजित कराने का भी आग्रह किया। उन्होंने समाज की तरफ से दुष्यंत जी को पुनः एम एल सी निर्वाचित होने पर हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए।

तत्पश्चात अंत में मंत्री शशांक जी के अनुरोध पर सदन में समाज के बिछड़े स्वजनों के लिए दो मिनट मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मंत्री शशांक जी ने बैठक में उपस्थित सभी लोगों का आभार व्यक्त किया वह अगली सूचना तक बैठक समाप्ति की घोषणा की।

– विवरण प्रस्तुति–

शशांक चतुर्वेदी, दिलीप सिकंदरपुरिया

मैं सभी का हृदय से आभारी हूं : शरद चतुर्वेदी

आदरणीय बुजुर्गों एवं बांधवों को सादर पालागन। सभी छोटो को शुभाशीष।

मैं शरद चतुर्वेदी (भूले) पुत्र स्व शिवनाथ जी (होलीपुरा /मथुरा) हूं। और मैं अपने प्रिय पुत्र चि. भरत का पिता हूँ। अपने बुजुर्गों के कथनानुसार दूसरों का सम्मान,अपने परिवार और अन्य के प्रति अपने कर्तव्यों का पूरा पूरा पालन किया हैं।मेरे जीवन के अंतिम पड़ाव पर ईश्वरीय प्रकोप से मेरे पुत्र चि. भरत को गंभीर बीमारी ने घेर लिया। जिसका इलाज मैं अपने पास से करा रहा था। अस्पताल के खर्चों में रूपये पैसे का काफी अभाव आ गया और मैं इलाज कराने में असमर्थ हो गया। मेरी भतीजे की बहू श्रीमती पूनम ने मेरी सहमति से समाज के जनमानस के समक्ष अपनी बात रखकर अपील निकाली। जिसमें समाज के सभी बांधवों से आर्थिक सहयोग एवं आशीर्वाद मांगा गया। अपील निकलते ही मेरे अनगिनत शुभचिंतकों ने भरपूर सहयोग किया और अन्य बांधवों को सहयोग करने के लिए प्रेरित किया। जिसमें सर्वप्रथम श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, समाज की शाखा सभाएं, समाज के बांधव, मेरे रिश्तेदार व गांव वालों ने मेरी सराहनीय मदद की।

मैं सभी का हृदय से आभारी हूं और अपने समाज का ऋणी हो गया हूं। आप सभी के सहयोग व आशीर्वाद से मेरे पुत्र भरत को दूसरा जीवन मिला। इस समय मैंने उसका शारीरिक परीक्षण कराया तो सभी मेडिकल रिपोर्ट अच्छी आई हैं। उसके शरीर में कोई कमी नहीं है। उसको पूर्ण स्वस्थ होने में अभी थोड़ा और समय लगेगा। आप सभी की उदारता के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। बस मेरी ईश्वर से यही कामना है कि वह समाज के प्रत्येक बांधव को स्वस्थ , सुखद और समृद्धि भरा जीवन प्रदान करें।

गुरु पूर्णिमा

- **चित्रा दिलीप चतुर्वेदी**, भोपाल

भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्व

भारत को ऋषियों, मुनियों और महान गुरुओं की भूमि कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में गुरु और शिष्य का संबंध अत्यंत पवित्र और आदर्श माना गया है। गुरु केवल शिक्षा देने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह जीवन का मार्गदर्शक, प्रेरणास्रोत और व्यक्तित्व निर्माता होता है। गुरु पूर्णिमा ऐसा पावन पर्व है जो गुरु के प्रति श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मनाया जाता है। यह पर्व आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है और भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक उत्सव माना जाता है।

गुरु पूर्णिमा का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व अत्यंत गहरा है। इस दिन महर्षि वेदव्यास का जन्म हुआ था। वेदव्यास जी ने वेदों का विभाजन किया, महाभारत की रचना की तथा अठारह पुराणों का संकलन किया। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यवस्थित रूप प्रदान किया। इसलिए उन्हें आदिगुरु कहा जाता है और गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस दिन लोग वेदव्यास जी को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं और उनके ज्ञान को प्रणाम करते हैं।

भारतीय शास्त्रों में गुरु को भगवान के समान माना गया है। संस्कृत का प्रसिद्ध श्लोक है –

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

इस श्लोक का अर्थ है कि गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान हैं। गुरु साक्षात परम ब्रह्म हैं और उन्हें प्रणाम करना चाहिए। गुरु हमें अज्ञान के अंधकार से निकालकर ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। वे हमें जीवन का सही मार्ग दिखाते हैं और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं।

गुरु का महत्व केवल प्राचीन समय तक सीमित नहीं है, बल्कि आज के आधुनिक युग में भी उतना ही महत्वपूर्ण है। आज शिक्षा के अनेक साधन उपलब्ध हैं। इंटरनेट, मोबाइल और पुस्तकें हमें जानकारी तो दे सकते हैं, परंतु जीवन की सही दिशा केवल गुरु ही प्रदान करते हैं। गुरु हमें अनुशासन, धैर्य, मेहनत और ईमानदारी का महत्व समझाते हैं। वे हमारे भीतर आत्मविश्वास जगाते हैं और हमें जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना करना सिखाते हैं।

प्राचीन भारत में गुरुकुल परंपरा प्रचलित थी। विद्यार्थी अपने गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। वहाँ केवल पुस्तक

ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाई जाती थी। गुरु अपने शिष्यों को आत्मनिर्भर, अनुशासित और संस्कारी बनाते थे। भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, अर्जुन और चंद्रगुप्त जैसे महान व्यक्तियों ने भी अपने गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की थी। इससे स्पष्ट होता है कि महान बनने के लिए गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक होता है।

गुरु पूर्णिमा का पर्व पूरे भारत में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, आश्रमों और धार्मिक संस्थानों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विद्यार्थी अपने शिक्षकों को पुष्प, उपहार और शुभकामनाएँ देकर सम्मान प्रकट करते हैं। कई स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम, भाषण, कविताएँ और भजन–कीर्तन आयोजित किए जाते हैं। आध्यात्मिक गुरु अपने शिष्यों को आशीर्वाद देते हैं और जीवन में सदाचार अपनाने की प्रेरणा देते हैं। इस दिन कई लोग अपने गुरु के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। कुछ लोग व्रत रखते हैं और पूजा–अर्चना करते हैं। आश्रमों और मंदिरों में सत्संग, यज्ञ और प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। लोग अपने गुरु के बताए हुए मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं। यह पर्व केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

बौद्ध धर्म में भी गुरु पूर्णिमा का विशेष महत्व है। माना जाता है कि भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद इसी दिन सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था, जिसे धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है। इसलिए बौद्ध अनुयायी इस दिन को विशेष श्रद्धा के साथ मनाते हैं। जैन धर्म में भी यह पर्व महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि भगवान महावीर के प्रथम शिष्य गौतम स्वामी को इसी दिन ज्ञान प्राप्त हुआ था।

गुरु केवल विद्यालय में पढ़ाने वाला शिक्षक नहीं होता। हमारे माता-पिता भी हमारे प्रथम गुरु होते हैं। वे हमें बोलना, चलना, व्यवहार करना और जीवन जीना सिखाते हैं। इसके बाद हमारे शिक्षक, मित्र, समाज और अनुभव भी हमारे गुरु बन जाते हैं। जीवन में हर वह व्यक्ति जो हमें कुछ अच्छा सिखाए, वह हमारा गुरु कहलाता है।

कबीरदास जी ने गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है –

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि यदि गुरु और भगवान दोनों सामने खड़े हों, तो पहले गुरु को प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि गुरु ही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं। यह गुरु के महत्व को अत्यंत सुंदर ढंग से दर्शाता है।

आज के समय में समाज में नैतिक मूल्यों का पतन देखने को मिलता है। लोग भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। ऐसे समय में गुरु की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। गुरु हमें सही और गलत का अंतर समझाते हैं तथा हमें मानवता, करुणा और सत्य के मार्ग पर चलना सिखाते हैं। वे हमें केवल सफल व्यक्ति ही नहीं, बल्कि अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा देते हैं।

गुरु पूर्णिमा हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में विनम्रता और सीखने की भावना हमेशा बनी रहनी चाहिए। जो व्यक्ति स्वयं को सर्वज्ञ मान लेता है, वह कभी प्रगति नहीं कर सकता। ज्ञान प्राप्त करने के लिए विनम्रता आवश्यक है। गुरु हमें निरंतर सीखने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी गुरु का महत्व बना हुआ है। आज शिक्षक विद्यार्थियों को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उन्हें करियर, व्यक्तित्व विकास और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। अच्छे शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन को बदल सकते हैं। एक प्रेरणादायक गुरु किसी भी विद्यार्थी को सफलता के शिखर तक पहुँचा सकता है।

गुरु पूर्णिमा का पर्व केवल औपचारिकता नहीं होना चाहिए। हमें अपने गुरुजनों के प्रति सच्चा सम्मान रखना चाहिए। उनके बताए हुए आदर्शों को जीवन में अपनाना ही उनके प्रति वास्तविक श्रद्धांजलि है। यदि हम अपने गुरु की शिक्षाओं का पालन करें, तो हमारा जीवन सफल और सार्थक बन सकता है। यह पर्व हमें भारतीय संस्कृति की महान परंपरा की याद दिलाता है। गुरु और शिष्य का संबंध केवल शिक्षा तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह विश्वास, प्रेम और सम्मान पर आधारित होता है। गुरु अपने शिष्य को सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए सदैव प्रयासरत रहता है। बदले में शिष्य का कर्तव्य होता है कि वह अपने गुरु का सम्मान करे और उनके उपदेशों का पालन करे। गुरु पूर्णिमा का संदेश आज के युवाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। युवा पीढ़ी यदि अपने गुरुजनों का सम्मान करेगी और उनके अनुभवों से सीख लेगी, तो वह जीवन में सही दिशा प्राप्त कर सकेगी। समाज और राष्ट्र के विकास में भी गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि वही भविष्य की पीढ़ी का निर्माण करते हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि गुरु पूर्णिमा भारतीय संस्कृति का एक महान और प्रेरणादायक पर्व है। यह पर्व हमें गुरु के महत्व का स्मरण कराता है और उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। गुरु हमारे जीवन के सच्चे मार्गदर्शक होते हैं। वे हमें अज्ञानता से ज्ञान की ओर, असत्य से सत्य की ओर और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। इसलिए हमें अपने गुरुजनों का सदैव सम्मान करना चाहिए और उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सफल, श्रेष्ठ और सार्थक बनाना चाहिए। यही गुरु पूर्णिमा का वास्तविक संदेश है।

विजयी भव

- **सुगंधा चतुर्वेदी**, लखनऊ

जीवन में आए झंझावातों से न डर,
युद्ध कर युद्ध कर,
वो मैदान हो,वैचारिक हो,राजनीतिक हो, पूर्ण मनोयोग से कर,
युद्ध कर युद्ध कर,
जय पराजय से न डर, यदि हारेगा तो पुनः खड़ा होगा, यदि जीतेगा तो प्रमाणिक होगा, प्रमाणिक होगा तो आधिकारिक होगा,आधिकारिक होगा तो जवाबदेयी होगा,जवाबदेयी होगा तो तुझ पर अंकुश होगा, अंकुश होगा तो न्यायिक होगा, न्यायिक होगा तो उचित कार्य करेगा,इसलिए
युद्ध कर युद्ध कर,
क्योंकि जिंदगी एक जंग है, अपने उचित निर्णय के लिए लड़, लड़,
और पूर्ण विश्वास से लड़, इसलिए
युद्ध कर युद्ध कर,
विजय का वरण कर,
विजयी भव, विजयी भव.

आदि शंकराचार्य-धर्मगुरु

- **शलभ चतुर्वेदी**, कोलकाता/अमेरिका

आदि शंकराचार्य भारतीय दर्शन के इतिहास में एक महान संत, दार्शनिक और समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका जन्म लगभग 788 ईस्वी में केरल के कालड़ी (Kalady) नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता शिवगुरु और माता आर्यांबा धार्मिक प्रवृत्ति के ब्राह्मण थे। बचपन से ही शंकराचार्य अत्यंत मेधावी और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। अल्प आयु में ही उन्होंने वेद, उपनिषद और अन्य शास्त्रों का गहन अध्ययन कर लिया। मात्र 8 वर्ष की आयु में उन्होंने संन्यास ग्रहण कर लिया और अपने गुरु गोविन्दपादाचार्य से दीक्षा प्राप्त की।

आदि शंकराचार्य ने अद्वैत वेदांत का प्रचार किया, जिसका मुख्य सिद्धांत है—

ब्रह्म सत्यं, जगत मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापर

अर्थात ब्रह्म ही सत्य है, यह संसार मिथ्या है और जीव स्वयं ब्रह्म का ही स्वरूप है। उनके समय में हिंदू धर्म अनेक मतों, कुरीतियों और अंधविश्वासों में उलझ गया था। उन्होंने पूरे भारत की यात्रा (दिग्विजय) कर विभिन्न विद्वानों से शास्त्रार्थ किया और वेदांत के सिद्धांतों को पुनः स्थापित किया।

वेदों और उपनिषदों की पुनः प्रतिष्ठा से

मूर्ति पूजा और भक्ति पर संतुलित दृष्टिकोण अपनाकर

सनातन धर्म को एकीकृत किया तथा बौद्ध और अन्य मतों के साथ दार्शनिक सामंजस्य बनाया।उन्होंने काशी, प्रयाग और कांची जैसे केंद्रों पर विद्वानों को परास्त कर वेदांत की श्रेष्ठता स्थापित की। आदि शंकराचार्य ने भारत के चारों दिशाओं में चार प्रमुख मठ (पीठ) स्थापित किए, जिससे धर्म का संगठन मजबूत हुआ।

1. दक्षिण पीठ
   स्थानः शृंगेरी
   नामः शारदा पीठ
   वेदः यजुर्वेद।
2. पश्चिम पीठ
   स्थानः द्वारका
   नामः शारदा मठ
   वेदः सामवेद।
3. पूर्व पीठ
   स्थानः पुरी
   नामः गोवर्धन मठ
   वेदः ऋग्वेद।
4. उत्तर पीठ
   स्थानः ज्योतिर्मठ (बद्रीनाथ के पास)
   वेदः अथर्ववेद।

इन चारों पीठों के माध्यम से उन्होंने सन्यास परम्परा और धर्म शिक्षा का सुव्यवस्थित तंत्र स्थापित किया।

आदि शंकराचार्य ने दशनाम संन्यासी परम्परा की स्थापना की।

इसमें दस प्रकार के संन्यासी संप्रदाय बनाए गएः–

1.गिरि 2.पर्वत,

3.सागर,4.पुरी,

5.भारती,6.सरस्वती,7.तीर्थ,8.आश्रम,

9.अरण्य,10.वन।

इनका उद्देश्य था—संन्यासियों को संगठित करना और धर्म की रक्षा करना।

उदाहरणः आज भी भारत के अनेक संत सरस्वती, भारती आदि उपनाम रखते हैं। कुंभ मेले में इन अखाड़ों की परंपरा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

आदि शंकराचार्य ने अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना कीः

ब्रह्मसूत्र भाष्य

भगवद्गीता भाष्य

उपनिषद भाष्य

भज गोविन्दम्

विवेकचूडामणि

* भज गोविन्दम् में उन्होंने ज्ञान के साथ भक्ति का महत्व बताया। आदि शंकराचार्य ने केवल दर्शन ही नहीं दिया, बल्कि समाज को नई दिशा भी दी।

हिंदू धर्म का पुनर्जागरण कर

विभिन्न मतों में समन्वय के साथ

आध्यात्मिकता को सरल बनाया।

संन्यासी होते हुए भी उन्होंने अपनी माता का अंतिम संस्कार किया।

जीवन का अंत : आदि शंकराचार्य ने केवल 32 वर्ष की अल्प आयु में ही महान कार्य कर दिखाए। माना जाता है कि उनका देहांत केदारनाथ में हुआ। आदि शंकराचार्य भारतीय संस्कृति के महान स्तंभ हैं। उन्होंने अद्वैत वेदांत के माध्यम से यह सिखाया कि समस्त जगत एक ही परम सत्य का रूप है। उनके द्वारा स्थापित मठ, परम्पराएँ और ग्रंथ आज भी हिंदू धर्म को दिशा दे रहे हैं।

स्वामी हरिहरानंद तीर्थ

- भरत चतुर्वेदी 'अचल' (होलीपुरा/रिषरा)

आषाढ़ मास की पूर्णिमा प्रतिवर्ष हम सबके जीवन में गुरु पूर्णिमा के रूप मनाई जाती है। इस दिन गुरु की पूजा अर्चना कर कृतज्ञता ज्ञापित करने का विधान है। वैसे तो इस दिन को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है, क्योंकि इस दिन महर्षि वेदव्यास का जन्मदिन है। बौद्ध धर्म के मतावलम्बी इस दिन को बुद्ध द्वारा सारनाथ में अपना पहला उपदेश देने की स्मृति के रुप में मनाते हैं। इस वर्ष गुरु पूर्णिमा का पर्व 29 जुलाई 2026 को है। जिस प्रकार भारत वर्ष में शंकराचार्य महाराज आदिगुरु के रुप में पूज्य हैं, जिन्होंने सम्पूर्ण भारत वर्ष में धर्म का प्रचार किया तथा देश के चारों कौनो में मठ की स्थापना की। उसी प्रकार होलीपुरा ग्राम में आज भी स्वामी हरिहरानंद सरस्वती आदिगुरु रूप में पूज्य हैं। ग्राम होलीपुरा सुख, समृध्दि एवं सुकीर्ति में स्वामी हरिहरानंद जी के सानिध्य का ही प्रतिफल है। इसे दैवयोग ही कहा जा सकता है कि मुख्यमार्ग से लगभग दो किलोमीटर दूर दस्यु आक्रात क्षेत्र में अचानक लगभग सन 1902 में एक गौरवर्णी सुदर्शन व्यक्तित्व से सुशोभित एक युवा संन्यासी होलीपुरा पहुंचता है।होलीपुरा वासी उनके आवास की व्यवस्था गौशाला स्थित भवन में कर देते हैं, जहां दूसरे दिन से आरंभ हो जाता है सत्संग।

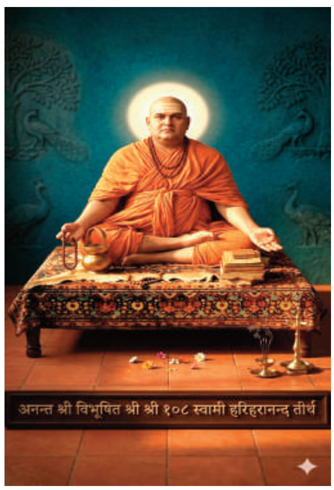

धीरे धीरे पता चलता है कि आप नेपाल राजपुरोहित परिवार से गौतमबुद्ध की भांति पत्नी एवं पुत्र का मोह त्यागकर ऋषिकेश पहुंचे जहां स्वामी अनन्तानन्द जी से दीक्षित होकर आपने आजन्म संन्यास में प्रवेश किया। बीच बीच में आप ऋषिकेश, बाराबंकी, प्रतापगढ़ स्थित रानीगंज एवं औरैया के आश्रमों में चले जाया करते जिससे होलीपुरा के भक्तगण उनके सानिध्य से वंचित हो व्याकुल हो जाते। पूज्य स्वामीजी के भक्तों ने ग्राम से लगभग एक किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में घने बीहड़ के मध्य यमुना मार्ग पर एक विशाल टीले पर आपकी साधना स्थली का निर्माण किया। जहां नित्य सांय 4 से 5 बजे आपके प्रवचनों का रसास्वादन भक्तगण करने लगे तत्पश्चात संध्या आरती में सम्मिलित होते। यह आपके प्रताप एवं आशीर्वाद का ही फल है कि तब से लेकर आज तक अनवरत संध्या आरती गुफा के आकर्षण का केन्द्र है। कालान्तर में सन 1928 को पूज्य स्वामी जी की देखरेख में चन्द्रमौलैश्वर मन्दिर का निर्माण कराया गया।गुफा पर स्वामीजी के द्वारा जन्माष्टमी, गुरु पूर्णिमा एवं शिवरात्रि विशेष रूप से आयोजित किए जाते रहे। पूज्य स्वामीजी के कई संस्मरण आज भी बुजुर्ग सुनाते हैं। यथा–स्वामी जी गांव में जब भिक्षा के लिए निकलते थे तो कुल तीन घरों में आवाज कुल तीन बार देते थे यदि प्रति उत्तर नहीं मिला तो आगे बढ़ जाते और जो जितना मिला उसे ही ग्रहण करते। उस समय रसोई चौके में बनती थी गृहणियां चौके से निकल कर देने को तत्पर हों तब तक कहीं तीसरी आवाज हो गई तो आगे बढ़ जाने का खतरा तो यह आम हो गया कि जैसे ही स्वामी जी की आवाज सुनी कि नारायण हरी संग संग आवाज आती रोटी करी धरी यानि कि आ रहे हैं।एक घटना हमने अपने पिता जी से सुनी है वह उल्लेखनीय है।कलकत्ता के राजा कटरा स्थित गंगा मन्दिर के पुरानी काश्मीर पण्डित परिवार के प्रकांड विद्वान थे पिताजी का गंगा मन्दिर नियमित जाना होता था।वे पिताजी के साथ होलीपुरा स्वामीजी के दर्शनार्थ गये उस समय गुफा पर भण्डारे की तैयारी चल रही थी। पिताजी और पण्डित जी स्वामीजी के पास बैठे थे कि कुछ देर में सेवक ने कहा कि स्वामी जी अबकी कुम्हार ने जाने कैसे घड़े दिये हैं जो भरने जाते हैं फूटे निकलते हैं। स्वामीजी ने चंद समय मौन धारण कर कहा कि जो फूटे घड़े है उन्हें दोबारा भरो और फिर क्या एक भी घड़ा फूटा नहीं निकला यह देख पण्डित जी स्वामीजी के चरणों में गिर पड़े जिस पर स्वामी जी ने यह अच्छी बात है कि आप तन्त्र विद्या जानते हैं लेकिन उसका उपयोग सही जगह पर करें।

ऐसे अनेक संस्मरण सुने जा सकते हैं। अपने अन्तिम समय में स्वामी जी होलीपुरा से प्रतापगढ़ स्थित रानीगंज आश्रम चले गये। जहां सन 1950 में आपने स्वर्गारोहण किया।आपकी जलसमाधि का संस्कार काशी के स्वामी घाट पर किया गया। आपके न रहने पर गुफा पर सन 1984 में जयपुर के कुशल शिल्पी द्वारा निर्मित मूर्ति स्थापित की गई। आज भी गुरु पूर्णिमा पर्व समस्त होलीपुरा वासी पूर्ण उत्साह के साथ मनाते हैं। जिसमें एक दिन पूर्व अखण्ड रामायण, प्रातः हवन पूजन एवं भण्डारा उल्लेखनीय है। स्वामी जी अपने भक्तों पर सदा अपनी कृपावृष्टि करते रहें। इसी कामना के साथ श्रीचरणों में कोटि–कोटि नमन।

यमुना को भी आना पड़ेगा

स्वामी हरिहरानंद जी, होलीपुरा : एक संस्मरण

सतीश चंद्र चतुर्वेदी (होलीपुरा /लखनऊ)

स्वामी हरिहरानंद जी के संबंध में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। वे कौन थे, कहाँ से आए थे और होलीपुरा के निकट आकर ही क्यों बस गए, इन प्रश्नों का उत्तर आज भी निश्चित रूप से कोई नहीं दे सकता। उनके जीवन के अनेक पक्ष रहस्य के आवरण में ही छिपे हुए हैं। किन्तु जब से मुझे अपने बचपन की स्मृतियाँ याद हैं, तब से मैंने उन्हें होलीपुरा के पास स्थित एक गुफा में निवास करते देखा। वहीं समीप भगवान शिव का एक प्राचीन मंदिर था, जहाँ वे नियमित रूप से पूजा-अर्चना करते थे। दूर-दूर से लोग उनके दर्शन के लिए आते, उनका आशीर्वाद प्राप्त करते और अपने जीवन के दुःख-दर्द उनके समक्ष रखकर मन को हल्का करते थे। जनसाधारण के मन में उनके प्रति अपार श्रद्धा, अटूट विश्वास और गहरा सम्मान था। लोगों का मानना था कि स्वामी जी केवल एक साधु ही नहीं, बल्कि एक ऐसे संत थे जिनकी कृपा और आशीर्वाद से जीवन की अनेक कठिनाइयाँ दूर हो जाती थीं। यही कारण था कि उनके आश्रम और गुफा पर श्रद्धालुओं का आना-जाना निरंतर बना रहता था। होलीपुरा और उसके आसपास के क्षेत्रों में बचपन से ही मैंने स्वामी हरिहरानंद जी महाराज के प्रति लोगों की अटूट श्रद्धा, गहरा सम्मान और अगाध आस्था देखी है। स्वयं मेरा भी यह परम सौभाग्य रहा है कि मुझे अनेक वर्षों तक उनके सान्निध्य में रहने और उन्हें प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिला। अपने जीवन में मैंने उनसे जुड़ी अनेक ऐसी घटनाएँ देखीं, जिन्हें सामान्य दृष्टि से समझ पाना कठिन है और जिन्हें लोग चमत्कार के रूप में स्मरण करते हैं। यहाँ मैं ऐसी ही एक घटना का वर्णन कर रहा हूँ, जिसका मैं स्वयं प्रत्यक्षदर्शी रहा हूँ।

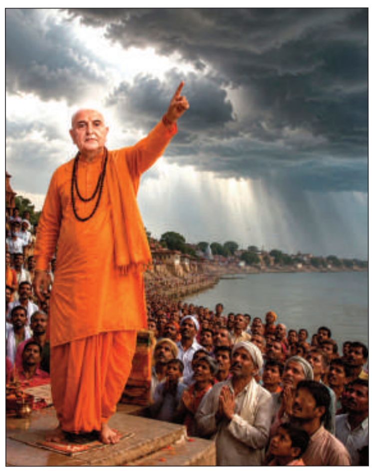

यह बात लगभग अस्सी वर्ष पुरानी है। उस समय मैं एक छोटा-सा बालक था और होलीपुरा के दामोदर इंटर कॉलेज में शायद छठी या सातवीं कक्षा में पढ़ता था। उस वर्ष बरसात का मौसम आ चुका था। आषाढ़ बीतने को था, किंतु वर्षा का कहीं नामोनिशान नहीं था। खेत सूख चुके थे, फसलें चौपट होने लगी थीं और गाँव में पीने के पानी का भी संकट खड़ा हो गया था। कुओं का जलस्तर लगातार नीचे जा रहा था। चारों ओर चिंता और निराशा का वातावरण था। गाँव के लोग समाधान की खोज में यमुना तट पर गुफा में निवास करने वाले संत स्वामी हरिहरानंद जी महाराज की शरण में पहुँचे। उन्होंने लोगों से कहा कि गुफा में स्थापित चंद्रमौलेश्वर महादेव का ग्यारह सौ घड़े जल से अभिषेक किया जाए। गाँव वालों ने तुरंत जलाभिषेक प्रारंभ कर दिया। गुफा के निकट एक छोटा-सा कुआँ था, उसी से पानी भर-भरकर लाया जाने लगा। परंतु जैसे-जैसे पानी निकाला गया, कुएँ का जलस्तर और नीचे जाता गया।

स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि कुएँ का पानी समाप्त होने की आशंका होने लगी। तब बैलगाड़ियों से गाँव के अन्य कुओं से पानी लाकर चंद्रमौलेश्वर महादेव का अभिषेक जारी रखा गया। कुछ लोगों ने चिंतित होकर स्वामी जी से कहा, महाराज, इससे तो कुछ होता दिखाई नहीं देता। उलटे छोटा कुआँ भी सूखने लगा है। यह सुनकर स्वामी हरिहरानंद जी कुछ रुष्ट हो गए। उन्होंने दृढ़ स्वर में कहा, यमुना को भी आना पड़ेगा!

कहते हैं कि उनके यह शब्द कहने के लगभग पाँच मिनट बाद ही लोगों ने उस छोटे कुएँ में नीले रंग की जलधारा फूटती देखी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं यमुना का जल उसमें प्रवेश कर रहा हो। धीरे-धीरे कुएँ का जलस्तर बढ़ने लगा। इससे का उत्साह और विश्वास दोनों बढ़ गए। ग्यारह सौ घड़े जल का अभिषेक पूरा किया गया। लोगों हम बच्चे और गाँव के अन्य लोग वहीं खड़े होकर प्रार्थना करते रहे। तभी अचानक आकाश का स्वरूप बदलने लगा। चारों ओर घनघोर काली घटाएँ छा गईं। देखते ही देखते मूसलाधार वर्षा प्रारंभ हो गई। पानी इतनी तीव्रता से बरसा कि लोगों ने कहा—ऐसी वर्षा उन्होंने वर्षों से नहीं देखी थी।

सभी लोग भीगते हुए, आनंद और उल्लास से भरकर, स्वामी हरिहरानंद जी महाराज की जय! और यमुना मैया की जय! के उद्घोष करते हुए होलीपुरा लौटे। कहते हैं कि उस वर्ष फिर पूरे वर्षा ऋतु में पानी की कोई कमी नहीं रही। खेत लहलहा उठे, कुएँ भर गए और लोगों के मन में यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया कि जब श्रद्धा, प्रार्थना और संतों का आशीर्वाद एक साथ मिल जाएँ, तो प्रकृति भी अपना रुख बदल देती है।

मुक्ति धाम (मुक्तिनाथ) नेपाल की यात्रा — एक आध्यात्मिक अनुभव

- सुनंदा चतुर्वेदी, कोलकाता

नेपाल के हिमालयी अंचल में स्थित मुक्तिनाथ धाम केवल एक तीर्थस्थल नहीं, बल्कि आस्था, साहस और प्रकृति के अद्भुत संगम का प्रतीक है। समुद्र तल से लगभग 3,800 मीटर की ऊँचाई पर बसे इस पवित्र स्थल की यात्रा अपने आप में एक अनूठा अनुभव है। मुक्ति अर्थात मोक्ष और नाथ अर्थात भगवान—इस प्रकार मुक्ति पाने का यह स्थान सदियों से हिंदू और बौद्ध श्रद्धालुओं का केंद्र रहा है।

यात्रा की शुरुआत

मेरी यह यात्रा उत्तर प्रदेश के लखनऊ से प्रारंभ हुई। पहले हम गोरखपुर होते हुए नेपाल के प्रवेश द्वार सोनौली पहुँचे। सीमा पार करते ही वातावरण में एक अलग ही शांति और सहजता का अनुभव हुआ। वहाँ से हम बस द्वारा पोखरा के लिए रवाना हुए। पोखरा, जिसे नेपाल का पर्यटन हृदय कहा जाता है, अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ से हिमालय की बर्फीली चोटियाँ साफ दिखाई देती हैं, जो मन को रोमांचित कर देती हैं।

पोखरा से जोमसोम तक

पोखरा में एक दिन विश्राम के बाद हमने जोमसोम के लिए उड़ान भरी। यह छोटी-सी हवाई यात्रा अत्यंत रोमांचक थी। विमान बादलों के बीच से गुजरते हुए हिमालय की चोटियों के बेहद करीब से निकलता है। नीचे बहती काली गंडकी नदी और आसपास के सूखे, पथरीले पहाड़ एक अलग ही दुनिया का अहसास कराते हैं। जोमसोम पहुँचकर लगा जैसे हम प्रकृति की गोद में आ गए हों।

जोमसोम से मुक्ति धाम तक

जोमसोम से मुक्ति धाम की दूरी लगभग 20 किलोमीटर है। यह रास्ता जीप या पैदल तय किया जा सकता है। हमने जीप से यात्रा करना उचित समझा। ऊबड़-खाबड़ रास्तों, तेज हवाओं और ठंडे वातावरण के बीच यह सफर चुनौतीपूर्ण था, परंतु हर मोड़ पर दिखती हिमालय की भव्यता इस कठिनाई को सुखद बना देती है।

मुक्ति धाम के दर्शन

मुक्तिनाथ मंदिर परिसर में प्रवेश करते ही एक अद्भुत शांति का अनुभव होता है। मंदिर के पीछे 108 जलधाराएँ (मुक्तिधारा) हैं, जिनके नीचे स्नान करना अत्यंत पवित्र माना जाता है। श्रद्धालु ठंडे पानी की परवाह किए बिना इन धाराओं के नीचे स्नान करते हैं। ऐसा विश्वास है कि इससे पापों से मुक्ति मिलती है।

मंदिर के अंदर भगवान विष्णु की मूर्ति है, जिन्हें यहाँ श्री मुक्तिनाथ के रूप में पूजा जाता है। पास ही ज्वाला माई मंदिर है, जहाँ प्राकृतिक रूप से जलती हुई अग्नि (ज्वाला) दर्शन देती है—यह जल, वायु और अग्नि का अद्भुत संगम है, जो श्रद्धालुओं को चमत्कृत कर देता है।

आध्यात्मिक अनुभूति

इस ऊँचाई पर पहुँचकर सांस लेना थोड़ा कठिन होता है, लेकिन मन में जो शांति और संतोष मिलता है, वह सभी कठिनाइयों को भुला देता है। ऐसा लगता है मानो हम अपने भीतर की यात्रा पर निकल पड़े हों। चारों ओर फैली नीरवता और हिमालय की विशालता मन को ध्यान और आत्मचिंतन की ओर प्रेरित करती है। यहाँ के स्थानीय लोग अत्यंत सरल और अतिथि-प्रिय हैं। उनकी जीवनशैली कठिन परिस्थितियों के बावजूद संतोष और सहजता से भरी होती है। छोटे-छोटे घर, तिब्बती झंडियाँ (प्रेयर फ्लैग्स) और पारंपरिक वस्त्र इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं।

वापसी की यात्रा

दर्शन के बाद हम पुनः जोमसोम लौटे और वहाँ से पोखरा होते हुए भारत वापस आए। यह यात्रा शारीरिक रूप से भले ही थोड़ी कठिन रही हो, लेकिन मानसिक और आध्यात्मिक रूप से अत्यंत संतोषजनक थी। मुक्ति धाम की यात्रा केवल एक पर्यटन यात्रा नहीं, बल्कि आत्मा को शांति देने वाली एक आध्यात्मिक यात्रा है। यहाँ आकर मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य, कर्म और मोक्ष के अर्थ को समझने का प्रयास करता है। यह यात्रा सिखाती है कि कठिनाइयों के बीच भी आस्था और विश्वास हमें आगे बढ़ने की शक्ति देते हैं। यदि आप प्रकृति, अध्यात्म और साहस का अद्भुत संगम अनुभव करना चाहते हैं, तो मुक्ति धाम की यात्रा अवश्य करें। यह यात्रा जीवनभर के लिए एक अमिट स्मृति बन जाती है।

केदारनाथ के शिवलिंग का आकार क्यों है त्रिकोणीय ?

- संजय मिश्रा, कानपुर

हिमालय की बर्फीली पहाड़ियों के बीच स्थित केदारनाथ धाम के कपाट खुल चुके हैं और रोजाना हजारों की संख्या में भक्त दर्शनों के लिए पहुंच रहे हैं। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक केदारनाथ धाम सिर्फ एक मंदिर नहीं बल्कि सनातन आस्था का प्रतीक भी है। सालों पहले - भयंकर बाढ़ में भी इस मंदिर को कुछ नहीं न हुआ, जिसके बाद से ही भक्तों में यहां दर्शन - करने की चाह बढ़ गई। साल में लगभग 6 महीने तक बर्फ की चादर में ढका रहने वाला केदारनाथ मंदिर कई रहस्यों से भरा - है। वहीं, यहां स्थित शिवलिंग से जुड़ी भी कई कथाएं और मान्यताएं प्रचलित हैं। = पंचकेदार में से एक केदरानाथ धाम समुद्र। तल से लगभग 11,755 फीट की ऊंचाई - पर स्थित है और यहां स्थापित ज्योतिर्लिंग सबसे ऊंचा माना जाता है। यहां स्थापित र स्वयंभू शिवलिंग का आकार भी अन्य - ज्योतिर्लिंगों से अलग है, जो इसे अधिक रहस्यमयी और अद्वितीय बनाता है। दरअसल, अन्य ज्योतिर्लिंगों की तरह - इसका आकार गोलाकार नहीं बल्कि त्रिकोणीय है।

यही अनोखा आकार इसे बाकी सभी शिवलिंगों से अलग और न रहस्यमयी बनाता है। केदारनाथ का न शिवलिंग लगभग 12 फीट ऊंचा और 12 1 फीट चौड़ा है। इसके अलावा श्रद्धालु मंदिर के सामने स्वंय बनती माता पार्वती और पांडवों की आकृतियां देखने के लिए भी आते हैं। सबसे दिलचस्प सवाल यह है कि केदारनाथ का शिवलिंग बैल की पीठ जैसा क्यों दिखाई देता है? इसके पीछे महाभारत काल से जुड़ी एक पौराणिक कथा है। ऐसा कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के बाद पांडव को अपने भाईयों की हत्या का पछतावा था। इसलिए वह अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते थे। ऐसे में भगवान शिव की शरण पाने के लिए पांडव और द्रौपदी हिमालय की ओर चल दिए। मगर, भगवान शिव उनसे रुष्ट थे और उनकी परीक्षा लेना चाहते थे।

ऐसे में भगवान शिव नंदी (बैल) का रूप धारण करके धरती में छिप गए। जब पांडवों ने उन्हें पहचान लिया तो भगवान शिव भूमि में समाने लगे। तब भीम ने उन्हें पूछ से पकड़कर रोकने की कोशिश की, जिससे उनकी बैल की पीठ वाला हिस्सा केदारनाथ में रह गया, जिसे आज शिवलिंग के रूप में पूजा जाता है। जब भगवान शिव ने बैल का रूप धारण किया और अंतर्ध्यान होने लगे तब उनके शरीर के अंग अलग-अलग स्थानों पर प्रकट हुए, जो आज पंचकेदार के नाम से प्रसिद्ध हैं। तुंगनाथ में उनकी भुजाएं, रुद्रनाथ में मुख, मदमहेश्वर में नाभि और कल्पेश्वर में उनकी जटाएं प्रकट हुईं। इन पांचों धामों का दर्शन करना बहुत ही पुण्यदायी माना जाता है।

गृहणी का औषधालयःमसालदान

- श्रीमती मनीषा पवन चतुर्वेदी, भोपाल

प्रत्येक घर में रसोईघर एक महत्वपूर्ण स्थान होता है।महत्वपूर्ण होने के साथ परम आवश्यक भी होता। प्रत्येक गृहणी का अधिकतर समय रसोईघर में ही बीतता है।परिवारजनों के अच्छे स्वास्थ्य की निर्भरता हमारे रसोईघर पर ही होती है। उसकी स्वच्छता के साथ अधिकतर प्रयोग में आने वाला मसालदान भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि रसोई घर। मसालदान साफ एवं नमी से दूर रखना चाहिये। मसालदान केवल भोजन को स्वादिष्ट ही नही बनाता प्राथमिक उपचार के लिये ओषधालय का कार्य करता है, इसलिये इसे देशी दवाखाना भी कहा जाता है। मसाले छोटे मोटे रोगो में दवा का काम करते है।

हल्दी : हल्दी में रोग प्रतिरोधक का कार्य करती है,कम शब्दो में एन्टीवाइटिक का काम करती है। यही कारण है,हल्दी को जैली के रूप में बना कर छाले की दवा बनायी जाती है। हल्दी को तवे पर हल्की सी भून कर शहद के साथ खाने से खांसी में आराम होता है। पिसी हल्दी को सेंधा नमक उसमें दो बूंद सरसों का तेल मिलाकर दांतों पर एवं मसूड़े पर मालिश करने पर मसूड़े स्वस्थ होते हैं तथा उनकी सूजन भी चली जाती है। पैरों पर कहीं भी चोट लग जाए हल्दी लगाने से चोट ठीक हो जाती है। एक चम्मच हल्दी गर्म दूध में डालकर देने से खांसी में आराम होता। किसी भी अंदरूनी चोट के समय भी दूध में हल्दी डालकर देने से लाभ होता है। हल्दी में एंटीसेप्टिक गुण होता है। डिलीवरी के समय महिलाओं को हरीरा या लड्डू दोनों में हल्दी का प्रयोग किया जाता है।

अजवाइन : अजवाइन का प्रयोग पंचक के रूप में किया जाता है। एक चम्मच अजवाइन सुबह खाली पेट खाने से गैस का बना बंद हो जाता है। यदि एसिडिटी हो रही हो उस समय अजवाइन और काला नमक मिलाकर गुनगुने पानी से खाने से एसिडिटी समाप्त हो जाती है। पूरी बनाते समय उसमें अजवाइन का प्रयोग किया जाता है। जिससे पूरी का पाचन शीघ्र होता है। डिलीवरी के समय अंगारों के ऊपर अजवाइन डालकर उसकी धुँआ शरीर पर दिया जाता है। यह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। दांत दर्द होने पर अजवाइन की पोटली बनाकर उसे सिर्फ गाल पर सिकाई की जाती है। इससे दांत दर्द में आराम मिलता है।

मैंथी दाना : मैंथी दाना खून को पतला करता है। मधुमेह रोगियों के लिए मेथी दाना रामबाण दवा है। एक चम्मच मैंथी दाने का चूर्ण पानी के साथ लेने से कब्ज एवं घुटने के दर्द मेंआराम मिलता है।

सौंफ : भोजन के बाद मुख शुद्धि के लिए इसका प्रयोग होता है। गर्मी में इसका शरबत भी बनाया जाता है। सौंफ की तासीर ठंडी होती है। इसको बादाम और मिश्री के साथ बराबर मात्रा में लेने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।सौंफ को मिश्री के साथ सामान्य मात्रा में पीस के खाने से दस्त और ऑव में आराम मिलता है।

हींग : हींग का उपयोग पेट दर्द छाती के दर्द में औषधि के रूप में काम आती है। भोजन में इसका प्रयोग किया जाता है।बहुत छोटे बच्चों के पेट में दर्द होने पर एकदम थोड़ी सी हींग पानी में घोलकरपेट पर हल्के से मालिश करने पर लाभ होता है।

इलायची : तोड़कर उसके अंदर के दाने तवे पर भून कर पीसे तथा शक्कर के साथ खाने से खांसी में आराम पड़ता है। बड़ी इलायची का चूर्ण शहद में मिलाकर चाटने से भी खांसी में आराम होता।

लोंग : यदि एसीडिटी हो रही हो तो दो लोगे चूसने से लाभ होता

है। दाँत या दाढ़ दर्द में लोंग रखने से दर्द में राहत होती है। खाँसी में लोंग चूसने से लाभ होता है।गले की खराश में लाभ दायक है।

जीरा : जीरा पाचनतंत्र मजबूत बनाता है। वजन को नियंत्रण करने के लिए एक चम्मच जींरा रात में भीगोकर सुबह उसका पानी पीने से वजन घटता है। मधुमेह में भी लाभ होता है। शरीर की सूजन कम करता है। हिचकी बन्द करता है।

मिर्च : यदि पागल कुत्ते ने काटा है तो तुरन्त पिसी लाल मिर्च पानी डाल कर पेस्ट बनाये तथा काटे हल स्थान में भर दें। पागल कुत्ते के काटने से जलन नही होती। इसके अतिरिक्तरसोई घर में और भी खाद्य वस्तुओ का उपयोग होता है।

ऑवला : आवला में विटामिन सी की मात्रा पाई जाती है। आंखों की रोशनी के लिए यह बहुत फायदेमंद है। ऑवले का प्रयोग रोज करने से बाल काले रहते ऑवले का प्रयोग किसी न किसी रूप में करना चाहिए। आँवले को कद्दूकस करके उसमें नमक तथा थोड़ी सी फिटकरी पीसकर मिलाकर अखबार पर फैलाकर सूखने दे खाने के बाद मुख शुद्धी का काम देगी।

तुलसी : तुलसी ज्वर नाशक है। सर्दी में इसका उपयोग काढ़ा बनाकर किया जाता।

छोटी हरण : भोजन के बाद इसको लेने से गैस नहीं बनती है। पाचन ठीक रहता है। खाना जल्दी हजम होता है।

पुदीना : लू लगने पर सिर दर्द होने पर पीसकर इसका उपयोग किया जाता है। मसूड़े के दर्द में इसके पानी के कुल्ले करने से आराम मिलता है और मुंह की दुर्गंध नाशक है।

जायफल : जायफल की तासीर गर्म होती है। सर्दी के दिनों में एक चम्मच दूध में दो फेर जायफल घिसकर वह दूध नवजात शिशु से 6 माह तक बच्चों को पिलाने से उनकी सर्दी दूर होती है। देसी घी में तो फिर जायफल घिसकर पसलियों पर मलने से भी सर्दी दूर होती है तथा पसलियां चलना बंद हो जाता है। खीर में जायफल घिसकर डालने से खीर का स्वाद बढ़ जाता है। यह सब नुस्खे आजमाए हुए हैं। इसे लाभ अवश्य होता है। आज भी बुजुर्ग महिलाएं इसी का प्रयोग करते हैं। आशा है निश्चित ही अन्य लोगों को भी लाभ प्राप्त होगा।

बच्चों के झगड़े- सीख

- प्रेम चतुर्वेदी, नोएडा

बच्चों के झगड़े देखने में जितने छोटे और हास्यास्पद लगते हैं, उतने ही गहरे संदेश भी अपने भीतर छिपाए होते हैं। जब दो बच्चे एक छोटी–सी टॉफी, खिलौना या मेरी पहले की बहस में उलझ जाते हैं, तो वह दृश्य किसी व्यंग्य–नाटक से कम नहीं होता। उनके चेहरे पर तमतमाहट, आवाज़ में ऊँचाई और तर्कों में बचकानापन—सब मिलकर एक ऐसी तस्वीर बनाते हैं, जिस पर हँसी भी आती है और सोचने पर मजबूर भी करती है।

व्यंग्य की दृष्टि से देखें तो बच्चों के झगड़े बड़े–बड़ों की दुनिया का आईना होते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि बच्चे अपने मन की बात सीधे और बिना लाग–लपेट के कह देते हैं, जबकि बड़े लोग उसी बात को शब्दों की चाशनी में लपेटकर प्रस्तुत करते हैं। एक बच्चा कहता है, यह मेरा है, तू मत छू, तो बड़ा आदमी भी लगभग यही कहता है, बस भाषा बदल जाती है—यह मेरी संपत्ति है, इसमें किसी और का अधिकार नहीं।

इस प्रकार बच्चों का झगड़ा हमें यह सिखाता है कि स्वार्थ की भावना उम्र के साथ खत्म नहीं होती, बल्कि अक्सर और परिष्कृत हो जाती है। बच्चों के झगड़ों में एक और दिलचस्प पहलू होता है—वे जल्दी शुरू होते हैं और उतनी ही जल्दी खत्म भी हो जाते हैं। पाँच मिनट पहले जो बच्चे एक–दूसरे से बात तक नहीं कर रहे थे, वही थोड़ी देर बाद साथ बैठकर खेलते दिख जाते हैं। व्यंग्य यहीं है कि बड़े लोग छोटी–छोटी बातों को वर्षों तक दिल में रखते हैं, रिश्तों में दरार डाल लेते हैं, पर सुलह करने में हिचकिचाते हैं। बच्चों से हमें यह सीख मिलती है कि मन की गाँठें जितनी जल्दी खोल दी जाएँ, उतना ही अच्छा है।

व्यंग्य यह भी दिखाता है कि झगड़े का कारण अक्सर बहुत तुच्छ होता है। एक खिलौना, एक पेंसिल या एक सीट—बस इतनी–सी बात पर युद्ध छिड़ जाता है। यही स्थिति समाज में भी देखने को मिलती है, जहाँ छोटी–छोटी बातों को अहंकार और जिद के कारण बड़ा रूप दे दिया जाता है। बच्चों के झगड़े हमें यह समझाते हैं कि हर बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेना मूर्खता है।

अंततः, बच्चों के झगड़ों पर किया गया व्यंग्य हमें आत्मनिरीक्षण का अवसर देता है। हम हँसते तो बच्चों पर हैं, पर कहीं न कहीं वह हँसी हम पर ही होती है। बच्चों की सरलता, उनकी क्षमा करने की क्षमता और जल्दी भूल जाने की आदत—ये सब गुण हमें अपनाने चाहिए। यदि हम भी अपने मन के अहंकार को थोड़ा कम कर लें और संबंधों को महत्व दें, तो जीवन कहीं अधिक सहज और सुखद हो सकता है। इस प्रकार, बच्चों के छोटे–छोटे झगड़े केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन की बड़ी सीख देने वाले व्यंग्यपूर्ण प्रसंग हैं, जो हमें सादगी, क्षमा और समझदारी का पाठ पढ़ाते हैं।

व्यथा पैंट शर्ट पीस की

- **श्रीमती उषा चतुर्वेदी**, भोपाल

मैं और मेरा सहोदर 1 साल के अन्दर विभिन्न प्रदेशों एवं नगरों का भ्रमण करके आज आये तो, शहर कुछ जाना पहचाना लगा जैसे पहले कभी देखा है। मनुष्य होता तो सोच लेता पिछले जन्म का सम्बन्ध रहा होगा, लेकिन मैं ठहरा कपड़ा जिसका बार-बार जन्म नहीं होता और ना उसे 8400000 योनियों में भटकना पड़ता है। हम दोनों सहोदर की एक ही व्यथा और एक ही पीड़ा है। हम लोग ज्यादातर एक ही साथ रहते तथा बहुत कम बिछड़ने की नौबत आती है।, उस समय जो चला जाता है दूसरा अपने भाग्य को कोसता रहता है। न जाने कब तक इस घुटन भरी जिंदगी को जीना होगा।

शहर के रास्ते इसलिए दिख गए कि मेरे स्वामी ने मुझे थैले में रखा था उपहार के कारणों से अटैची फुल थी। हम दोनों ही एक ऐसा उपहार थे जिससे उन्हें कोई लगाव नहीं दिख रहा था ,और ना ही हमारे टूटने टूटने फूटने का डर था। हम उपेक्षित से पुराने कपड़े के थैले में बैठा दिए गये। घर पहुँचते ही मैंने अपना मूल घर पहचान लिया ,जहाँ से मेरी यात्रा प्रारम्भ हुई थी। मुझे विश्वास हो गया दुनिया गोल है जहाँ से चलो लौट के वहाँ आया जा सकता है। याज्ञवल्कय ने अपने संस्कृत के ग्रंथों में धरती गोल है लिखा था। अरस्तु और होमरके दावे धरती गोल है उनका दावा भी सच हो गया । हम दोनों सहोदर अपने मूल धरा पर फिर आ गए थे।

हम लोगों की व्यथा कोई नहीं समझ रहा सालों हम लोग बक्सों में बन्द रहते हैं घुटन होती है साँस लेने के लिए भी तरस जाते आदमी का चेहरा देखें सालों गुजर जाते और यह हाल हम लोगों का सबसे अधिक हुआ है जबसे जींस का प्रादुर्भाव हुआ।

जींस के लिए दिल से बद्दुआ निकलती जिसके कारण हम लोगों का यह हाल हुआ , पहले लोग हमें हाथों हाथ लेते थे बड़े प्रेम से अपनाते थे। हमारा भी समय था कोई पतली मोहरी की पेंट पहनता था तो कोई बेल बॉटम हमने भी फैशन में रहना सीखा।

क्या करें समय का फेर है समय के आगे किसी की नहीं चलती। जींस के ऊपर टॉप आ गई तो अब हमारा सहोदर भी बड़ा दुखी है हम दोनों एक साथ एक पैकिंग में ही रहते। शादी तीज त्योहार दीपावली रक्षाबंधन ईद सब का बड़ा बेसब्री से इन्तजार करते हैं। कम से कम अलमारी या बॉक्स से हम बाहर तो निकलेंगे और एक नए स्थान पर पहुँच जायेगे। बहन बेटी का भात भेजना हो, तो परिवार वालों के कपड़े जायेगे घर की मालकिन को हम याद आते पेंट और शर्ट के पीस रखें वही दे देते हैं। देखो अब मेरी आप तारीफ नहीं करेंगे कि मैं घर को किस तरीके से चला रही हूँ।

और हम दोनों सहोदर का पैकेट निकालकर भेज दिया जाता है या जिसको देना है उसे दे दिया। लेने वाला सोचता है चलो कोई बात नहीं घर में आना-जाना बना रहता है, किसी को दे देंगे पैसे बच जायेगे। पहले किसी को उपहार में हम लोग दिए जाते थे तो लोग प्रसन्न होते थे चलो अच्छा है शर्ट पेंट बनवा लेंगे दीपावली पर काम आएगी। पर अब तो जब हम दिए जाते हैं तो लेने वाला बेमन से लेकर उपेक्षित भाव से रख लेता है। देने वाले ने पैकिंग बहुत सुन्दर से बनायी है।लेकिन जब वह पैकिंग खोली जाती है और हम लोग निकलते हैं तो यही मुँह से निकलता है क्या बेकार की चीज दे दी आजकल कौन पेंट पहनता है जींस देते तो कम से कम काम तो आती, आप सोचो हम लोगों के दिल पर क्या बीती होगी। वह भी मन में फैसला कर लेता है कि यह पैकिंग हमें किसे देनी है। इस तरह से हम लोग एक नगर से दूसरे नगर एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश भ्रमण करते ही रहते हैं।

दर्जी महोदय का मुँह तो हम देखे ही नहीं पाते।

अभी मैं 1 साल में 8 स्थानों पर घूम कर आया हूँचलो अपने घर तो आ गए पर खोला किसी ने नहीं एक हाथ से दूसरे हाथ दूसरे से तीसरे आज घूमते ही रहे। आशा से दुनिया चलती है और अपनी सोच सकारात्मक रखनी चाहिए। हम लोग भी सोच लेते हैं कम से कम हम लोगों के हाथों हाथ तो रहते हैं। भ्रमण का समय मिलता है वातावरण, लोगों का स्वभाव, बोलचाल, रहन सहन सब देखते रहते हम लोगों की ज्ञान में वृद्धि होती है।

ऑनलाइन शॉपिंग ने भी हमारी व्यथा बढ़ा दी है। मोबाइल हाथ में दिनभर रहता है गेम खेलो तो सीरियल देखो तो बात करूँ तो बीच में विज्ञापन आते ही हैं विज्ञापन इतनी रोचक होते हैं कि वह ग्राहक की बुद्धि पर पर्दा डाल देते और वह जींस खरीदने को अपना सौभाग्य समझते। बेचारे दर्जी की हालत भी हम लोगों जैसी हो रही है यही कारण है कि उन्होंने भी रेडीमेड जींस टॉप रखना शुरू कर दिया। ऐसा नहीं है की जींस में सारी अच्छाई ही है।

उसके दुष्परिणाम भी सामने आने लगे इतनी ज्यादा टाइट रहती है खून का प्रभाव रुकता है पैरों में तकलीफ होने लगती है ठीक से बैठा नहीं जाता, महीनों धोया नहीं जाता पसीना मरने के कारण त्वचा रोग होते हैं। दूसरी तरफ हम लोग थे शान से जीते थे पैंट की क्रीज बिगड़ न जाये इसका ख्याल सब रखते थे।धोते समय भी क्रीज में क्रीज मिलाकर सूखने डालते थे। राजसी ठाठ थे

हमारे। हमारा उपयोगकर्ता बड़ा सुविधाजनक रहता था भाग दौड़ खेल कूद उठना बैठना सभी आसानी से कर लेता था, साथ ही हम लोग लोगों की शारीरिक अक्षमता को भी छुपाते थे।

बस अब इतनी ही व्यथा आपसे कहते हैं, अलमारी खोलने की आवाज आ रही है बस हमारा प्रवेश होने वाला ही है। अरे यह क्या इसी बीच में घरेतिन का भाँजा आ गया।

कपड़े की दुकान थी, मालकिन ने उसे थमा दिया हम लोगों को और कहा जितने में बेचो बेच देना छोटे की जींस ले आना। और हम लोग मुंबई नगरिया की यात्रा पर निकल पड़े आप लोग भी सावधान रहें हम लोगों को उस समय बहुत कष्ट होता है जब हमारा सहोदर जींस का शरीर जगह–जगह से कट गया है फट गया है। किंतु पश्चिमी सभ्यता के अंधा अनुकरण के कारण जींस धारी उसका त्याग नहीं करते ना ही उसका कोई इलाज कोई टोके तो कहते हैं आजकल का फैशन।

जरा उनसे पूछो यह तो उनका शरीर कहीं से कट गया हो या फट गया हो तो वह शरीर की दवा नहीं करेंगे कह देंगे फैशन। अरे भाई नकली अंग्रेज कम से कम उस जींस बेचारी पर तो दया करो कब तक पहनो गे जब शरीर से कट के वह अलग गिर जाएगी।

भाग्य हमें आपके पास भी ला सकता है फिर देखेंगे आप क्या व्यवहार करते हो। अभी तो बड़ी आशा से जा रहे हैं।

अच्छा बाय बाय अब हम लोग अटैची में विराजमान हो गए, यह सोचते हुए शाखें अगर रही तो, पत्ते भी आयेगे।

यह दिन अगर बुरे हैं, तो अच्छे भी आयेगे। मैं उस लेखक का आभारी हूँ मुझ अनपढ़ की व्यथा को लिखा। वह एक सह यात्री था जिसे मैनेअपनी कहानी सुनता गया और वह लिखता गया। हमारी तरफ से आप लोगों को भी साधुवाद कि आपने हमारी व्यथा सुनी शायद व्यथा सुनकर आप हमारा उपयोग कर ले।

कितना बदल गईं गर्मियों की छुट्टियां ?

कितना बदल गईं
गर्मियों की छुट्टियां ?

वो ननिहाल की तैयारी
उछल कूद नई नई यारी
बाल्टी में भींगे आम
नए नए खेल तमाम
फर्श का बिछौना

छत पर सबका सोना
तरैया होती पतंग
आइस पायस संग
दिन भर धूल धक्कड़
रे माई डी इक्कढ़ दुक्कड़
सत्तू सा स्वाद न दूजा
तरबूज और खरबूजा

उछल पड़ते सुनते ही
कुल्फी की घंटियां।
कितना बदल गईं
गर्मियों की छुट्टियां ?

अमर्तवान में रखे अचार
एक पंखे में पूरा परिवार
चिलचिलाती धूप में शोर
मस्ती ही मस्ती चहुंओर
लाई चने मुट्ठी भर बांट
दादी,नानी की वो डांट
मुश्किल से मिलते कामिक्स
जिनका किराया था फिक्स
चंपक,नंदन और पराग
लोट पोट की मीठी याद
चाचा चौधरी और साबू
कहां रहता था काबू

याद आते हैं कंचा, किल्ली
लूडो,कैरम की गुट्टियां।
कितना बदल गईं
गर्मी की छुट्टियां ?

अब तो छुट्टियों की खोज
होम वर्क , ऑनलाइन का बोझ
कंप्यूटर, मोबाईल से बस यारी
हाय!हैलो की ही रिश्तेदारी
जो देखो मोबाईल से ही
बतियाता है।

कोई किसी के घर रहने को
कहां जाता है ?
मैगी, पाश्ता,पिज्जा की भीड़ में
खो गए दूध,दही और मटठे।
अब कहीं नहीं दिखते
चक चक चलनी खेलते
कहीं बच्चे इकट्ठे ।।

सुविधाओ की चाहत में कई
सवाल खड़े हो गए।
हमारे बच्चे समय से
पहले बड़े हो गए।।

पढ़ने को व्हाट्सप
की कोरी झुठठियां।
कितना बदल गईं
गर्मियों की छुट्टियां।।

– डा०कुश चतुर्वेदी

किस्सागोई

- विभा अतुल, लखनऊ

लखनऊ की किस्सागोई भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की एक अनमोल धरोहर है, जो न केवल मनोरंजन का माध्यम रही है, बल्कि सामाजिक, नैतिक और ऐतिहासिक चेतना को भी जीवंत रखती आई है। किस्सागोई का अर्थ है—कहानी कहने की कला। यह कला विशेष रूप से लखनऊ में नवाबी दौर में विकसित होकर अपनी चरम सीमा पर पहुँची।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

लखनऊ की किस्सागोई का इतिहास में मुगल काल के उत्तराद्ध ं और अवध के नवाबी दौर से जुड़ा हुआ है। जब दिल्ली का राजनीतिक प्रभाव कम होने लगा, तब साहित्य, संगीत और कला का केंद्र लखनऊ बन गया। यहाँ के नवाबों—विशेषकर-आसफ उद्दौला और वाजिद अली शाह—ने कला और साहित्य को भरपूर संरक्षण दिया। इसी वातावरण में किस्सागोई को पनपने का अवसर मिला।

परंपरा और शैली

लखनऊ की किस्सागोई केवल कहानी सुनाने तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें भाषा की नजाकत, अदब, लहजा और अभिनय का अद्भुत संगम होता था। किस्सागो (कहानी सुनाने वाला) अपनी आवाज़, हाव-भाव और संवाद शैली से श्रोताओं को बांधे रखता था। उर्दू और फारसी भाषा का प्रयोग इसमें प्रमुख रूप से होता था, जिससे इसमें एक खास शालीनता और मिठास आ जाती थी।

इस परंपरा में दास्तानगोई का विशेष स्थान है, जो किस्सागोई का ही एक विकसित रूप है। दास्तानगोई में लंबी-लंबी वीरता, प्रेम और रोमांच से भरी कहानियाँ सुनाई जाती थीं।

प्रमुख उदाहरण

लखनऊ की किस्सागोई का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण दास्तांन-ए-हमजा है। यह एक विशाल कथा-संग्रह है, जिसमें वीरता, जादू, प्रेम और युद्ध की अद्भुत कहानियाँ शामिल हैं। इसे सुनाने वाले दास्तानगो घंटों तक श्रोताओं को मंत्रमुग्ध रखते थे। इसके अलावा, मीर तकी मीर और मिर्जा गालिब के समय में भी कहानी कहने की यह परंपरा साहित्यिक गोष्ठियों में जीवित रही, जहाँ

किस्सों के माध्यम से सामाजिक और भावनात्मक अनुभव साझा किए जाते थे।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

किस्सागोई केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को शिक्षित करने का माध्यम भी थी। इसमें नैतिक शिक्षा, जीवन के मूल्य, और ऐतिहासिक घटनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता था। यह परंपरा लोगों को एकजुट करने, भाषा को समृद्ध बनाने और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में सहायक रही।

वर्तमान प्रचलन

आज के आधुनिक युग में, जब डिजिटल माध्यमों का प्रभाव बढ़ रहा है, लखनऊ की किस्सागोई फिर से पुनर्जीवित हो रही है। प्रसिद्ध युवा कलाकारों ने दास्तानगोई को नए मंचों पर प्रस्तुत कर इसे युवा पीढ़ी तक पहुँचाया है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, साहित्य उत्सवों और रंगमंच के माध्यम से यह परंपरा आज भी जीवित है।

निष्कर्ष

लखनऊ की किस्सागोई केवल एक कला नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है, जो समय के साथ बदलते हुए भी अपनी मूल आत्मा को बनाए रखे हुए है। यह न केवल अतीत की याद दिलाती है, बल्कि वर्तमान और भविष्य को भी सांस्कृतिक रूप से समृद्ध करती है।

सलोना -आम का अचार

- सुचित्रा चतुर्वेदी, लखनऊ

ब्रज क्षेत्र के चौबो के गांव-गांव में बनने वाला सलोना आम का अचार अपने खट्टे, मसालेदार और हल्के तीखे स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। सलोना का अर्थ है – ऐसा स्वाद जिसमें नमक, खट्टापन और मसालों का संतुलन हो। अचार भारत में एक पारंपरिक संरक्षित खाद्य है, जिसमें कच्चे आम, तेल और मसालों का उपयोग कर लंबे समय तक सुरक्षित रखा जाता है।

** **आवश्यक सामग्री (लगभग 1 किलो अचार के लिए)**

कच्चे आम – 1 किलो (सख्त और खट्टे)
नमक – 80–100 ग्राम
हल्दी पाउडर – 2 चम्मच
लाल मिर्च पाउडर – 2–3 चम्मच
राई (पीसी हुई) – 3 चम्मच
मेथी दाना – 2 चम्मच (हल्का भुना)
सौंफ – 2 चम्मच (दरदरी)
हींग – 1/2 चम्मच
सरसों का तेल – 250–300 ml।

ये सभी मसाले आम के अचार में पारंपरिक रूप से उपयोग होते हैं और स्वाद के साथ संरक्षण भी करते हैं

****बनाने की विधि :**

1. आम की तैयारी

कच्चे आम को धोकर कपड़े से अच्छी तरह सुखा लें (नमी बिल्कुल न रहे)।
आम को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट लें।

2. नमक और हल्दी मिलाना

कटे आम में नमक और हल्दी मिलाकर 1–2 दिन के लिए ढककर रखें।
इससे आम का पानी निकलता है और वह नरम होता है।

3. मसाला तैयार करना

मेथी दाना और सौंफ को हल्का भूनकर दरदरा पीस लें।
इसमें राई, लाल मिर्च, कलौंजी और हींग मिला दें।

4. तेल गरम करना

सरसों का तेल धुआँ आने तक गरम करें, फिर ठंडा कर लें।
यह अचार को खराब होने से बचाता है।

5. अचार मिलाना

आम के टुकड़ों में तैयार मसाला डालें।
ऊपर से ठंडा तेल डालकर अच्छे से मिलाएँ।

6. धूप में रखना

अचार को काँच या चीनी मिट्टी के जार में भरकर 5–7 दिन धूप में रखें।
रोज़ हल्का हिलाएँ ताकि मसाला अच्छी तरह मिल जाए।

सलोना स्वाद के खास टिप्स--

- नमक और खट्टेपन का संतुलन रखें (यही असली सलोना स्वाद है)।
- सरसों का तेल थोड़ा ज्यादा रखें—यह स्वाद और टिकाऊपन दोनों बढ़ाता है।
- ज्यादा तीखापन न रखें, बल्कि मसालों का संतुलन बनाएँ।
- अचार में नमी बिल्कुल न जाने दें।

** **अचार को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के उपाय** :

- हमेशा सूखे चम्मच से ही अचार निकालें।
- तेल की परत ऊपर बनी रहे।
- जार को धूप में समय-समय पर रखते रहें।
- **नमी और पानी से बचाएँ** : यही खराब होने का मुख्य कारण है। ब्रज क्षेत्र में सलोना आम का अचार स्वाद, परंपरा और स्वास्थ्य का अनोखा संगम है, जो हर भोजन को स्वादिष्ट बना देता है। सही विधि और सावधानी से बनाया गया यह अचार सालों तक सुरक्षित रहता है और घर की रसोई की शान बढ़ाता है।

सार्वजनिक विनम्र अपील*
22.06.2026

सम्मानीय बन्धुवर/बहिन जी

सादर पालागन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु. 24000/- वार्षिक (रु. 2000/ - प्रति माह के अनुसार) से विगत कई वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता अपने ही समाज के 46 परिवारों के मध्य प्रदान की जा रही है।

वर्तमान में यह सहायता राशि त्रैमासिक अप्रैल, जुलाई,अक्टूबर तथा जनवरी के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2026-27 की प्रथम किश्त 28 मार्च 2026 (अप्रैल/मई/जून 26) की राशि लाभार्थियों के खाते में प्रेषित की जा चुकी है।

सहयोग राशि Rs. 2,56,200/- लाभार्थियों के बैंक खातों में सीधे भेजी जाती है।

सहयोग देने वाले बांधवों के नाम तथा उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि :-

1.प्रदीप जी, चंडीगढ़ 5100/-
2.आनंद सिंह परिवार, होलीपुरा 24000/-
3.प्रवेश जी,आगरा 5100/-
4.सावन जी,आगरा 5100/-
5.शशांक जी,सिलवासा 12000/-
6.पदम जी,लखनऊ 2000/-
7.निशा जी,नोएडा 1100/-
8.नवीन जी,लखनऊ 2100/-
9.संजय जी,अहमदाबाद 5100/-
10.प्रदीप जी,लखनऊ 2100/-
11.संजय जी,नोएडा 2000/-
12.मनोज जी,सागर 5100/-
13.इंदु जी,नोएडा 5100/-
14.मंजुल जी,फरीदाबाद 2100/-
15.बृजेश जी,भोपाल 1500/-
16.विकास जी,कानपुर द्वारा बाबू ओंकार नाथ जी की स्मृति में व श्री प्रभात जी,इटावा की स्मृति में 24000/-
17.सलिल जी,गुरुग्राम 1100/-
18.संजय जी,नोएडा के नाती होने के अवसर पर 2100/-
19. प्रणव जी,गुरुग्राम 3100/-
20. अविनाश जी,कानपुर 12000/-
21. विशाल जी,दानपुर 1100/-
22. मुनींद्र जी,नोयडा 5100/-
23. लोकेंद्र जी,गाज़ियाबाद 5100/-
24. नीमा सुधीर जी,मुम्बई 5100/-
25.ज्योत्स्ना जी,नोयडा 5100/-
26.विनोद जी,मुंबई 11,100/-
27.पंकज जी,मुम्बई 5100/-
28. स्व. कस्तूरी जी की स्मृति में जगदीश प्रसाद जी (सिकंदरपुर/भोपाल) द्वारा 5100/-
29. स्व. राकेश जी की स्मृति में अनुज जी (बिजकौली/दिल्ली) द्वारा 12000/-
30. प्रो. ओ.पी. चतुर्वेदी (भोपाल) की स्मृति में 5100/-
31. निखिल जी,प्रयागराज 1100/-
32. प्रो.अरविंद जी,फरीदाबाद 5100/-
33. देवेंद्र जी, गोंदिया 11,000/-
34. भुवनेश जी,गोंदिया 11,000/-
35. ऊषा जी,भोपाल 5100/-
36. निखिल जी,फिरोजाबाद 1100/-

कुल प्राप्त सहयोग राशि योग :

Rs. 2,15,100.00

इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। सभी बांधव तथा बहनों से करबद्ध निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में खुले हृदय से सहयोग देने की कृपा करें।

सहयोग राशि भेजने के लिए :-महासभा खाता विवरणः

Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

राशि स्थानातंरण के बाद उस राशि की सूचना निम्न नंबर पर अपने दूरभाष तथा email के साथ भेजने की कृपा करें ।

निवेदक
शशांक चतुर्वेदी
मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
9826086879

ग्रामीण लोक रचनाएं

संकलनकर्ता - पदम चतुर्वेदी, लखनऊ

हस्सुआ

1.
हस्सुरे हस्सुआ
हस्सुआ की डूढ़ी गैया
चलौ हस्सू प्याय लायें
प्याय लैओ तुम्हहीं
तो बैठे रहे हमहीं
चलौ हस्सू चारौ डालें
चारौ डालौ तुम्हहीं
तो बैठे रहें हमहीं
चलौ हस्सू दूध दुहें
दूध दुहौ तुम्हहीं
तो बैठे रहें हम हीं
चलौ हस्सू दूध पियें
दूध पियें हमही
तो बैठे रहौ तुम्हहीं

2.
पिडकुलिया मागै गोफनी
सो जुड़री रखावन जाय।
हस्सू ठाढे खेत में
मंद-मंद मुस्काय।।

3.
भैंस वमूरा चढ़ि गई
और लपलप लपसी खाय।
हस्सू सोचे आज अब
भैंस दुही नहिं जाय।।

4.
फूट कचरिया पकि गई
और हार खेत महकाय।
हस्सू सोचें जाय
अब कैसे तोड़ो जाय
रखवारौ वा खेत कौ
लियो लटठ तैयार

5.
ऊँट पनारे बहि गओ
वाइ हस्सू रोकन जॉय।
रोकि न पाये ऊँट को
और अपुन बहे चले जाय।।

***

चींटी

चींटी व्यानी चौंट पे
बाई हथिया चौखन जाय।
अस्सी पसन्ना दुहि लये
और तोऊ रही पशुराय।।
चींटी मरि गई चौंट पे,
बाई हथियन लई जाय कढ़ेर।
बछड़न को मोहरा बन
और बध्धन को गलखोर।।

***

रिश्ते अब कहीं खो गए हैं

- मनीष चतुर्वेदी इटावा/लखनऊ

क्योंकि रिश्ते अब या तो व्यस्त हो गए हैं,
या अपनी ही दुनिया में मस्त हो गए हैं।

कुछ हालातों से त्रस्त हो गए हैं,
कुछ जिम्मेदारियों से सुस्त हो गए हैं,
और कुछ तो यूँ ही निरस्त हो गए हैं।

इन्हीं सब कारणों से आज,
अपनेपन के धागे ढीले हो गए हैं,
और हम सब भीतर ही भीतर
कुछ न कुछ पस्त हो गए हैं।।

दूरी घरों की नहीं, दिलों की बढ़ी है,
रिश्तों की गर्माहट अब समय की कमी में पड़ी है।

शाखा समाचार

लखनऊ

दिनाँक 31 मई 2026 को लखनऊ मंडल की आमसभा की बैठक संरक्षक अजय जी के आवास पर संपन्न हुई, बैठक की शुरुआत अजय जी के मंगला चरण से हुई। बैठक में मंत्री सौरभ की अनुपस्थिति में बैठक का संचालन सहमंत्री हर्ष जी ने किया। विगत मीटिंग की रिपोर्ट के बाद कोषाध्यक्ष पियूष जी ने वर्ष 2025/26 की बैलेंस शीट प्रस्तुत की। चर्चा में नीरज जी, प्रफुल्ल जी, संजय जी, वर्षा जी हर्ष जी, निखिल जी आदि ने अपने विचार रखे। यदुवेश जी ने मेडिकल फंड में आवश्यक 10% फंड ट्रांसफर न होने की बात उठाई। अध्यक्ष प्रदीप जी ने कहा कि कुछ तकनीकी कारणों से ऐसा नहीं हो सका है। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही आवश्यक रुपए 63000/– मेडिकल फंड में ट्रांसफर कर दिया जाएगा।

अध्यक्ष प्रदीप जी ने सदन को जानकारी दी कि मंडल के पास रखे बर्तनों को रूपए 70000/ में बेच दिया गया है। सभी ने उनके प्रयासों की प्रशंसा की और सदन ने सर्वसम्मति से उन सत्तर हजार रूपए की एफडी बनवाने की सहमति दी। अध्यक्ष जी ने जून जुलाई में वाटर पार्क में पिकनिक आयोजन के लिए किये जा रहे प्रयासों की भी जानकारी सदन को दी। उसके बाद सहमंत्री तनुजा जी ने अध्यक्ष जी की अनुमति से बताया कि 15 –16 अगस्त को हरियाली तीज का कार्यक्रम होगा। स्थान की सूचना यथा संभव शीघ्रातिशीघ्र दी जाएगी।

इसके बाद सदन में मंडल द्वारा प्रस्तावित सामूहिक यज्ञोपवीत करवाने पर चर्चा हुई चर्चा में संरक्षक नवीन जी, अजय जी, उदिता जी, बबिता जी, राकेश जी, विपिन जी, पंकज जी ने अपने अपने विचार रखे। इसके बाद अध्यक्ष जी ने व्यवस्था दी कि कम से कम दस बटुक होने पर ही सामूहिक यज्ञोपवीत आयोजित किया जाएगा। उन्होंने इसके लिए सभी से बटुक बुलाने में सहयोग मांगा।

इसके बाद मंडल के सोसायटी रजिस्ट्रेशन की अवधि पूर्ण हो जाने की चर्चा हुई। जिस पर अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष जी ने सदन को विश्वास दिलाया कि शीघ्र ही रजिस्ट्रेशन का नवीनीकरण करवा लिया जायेगा। अंत में सदन ने बैठक के लिए सुंदर स्थान उपलब्ध करवाने और सुमधुर जलपान करवाने के लिए श्रीमती कमलेश जी,अजय जी एवं शिल्पी जी को धन्यवाद प्रेषित कर बैठक का समापन किया।

– **प्रदीप चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

कितना बदल गईं गर्मियों की छुट्टियाँ

– **मनीष चतुर्वेदी,** इटावा/लखनऊ

पहले गर्मियों की छुट्टियाँ आते ही,
मोहल्ले की गलियों में रौनक छा जाती थी।
मामा के घर जाने की खुशी में,
हमारी आँखें चमक जाती थीं।
आम के बाग, पेड़ों की छाँव,
कंचे, गिल्ली–डंडा और पतंगों का गाँव।
न मोबाइल था, न इंटरनेट का जाल,
फिर भी हर दिन लगता था कमाल।
अब छुट्टियाँ कमरों में सिमट गई हैं,
मोबाइल और स्क्रीन में बँट गई हैं।
न वो पेड़ों पर चढ़ने का शौक रहा,
न दोस्तों संग धूल उड़ाने का जोश रहा।
पहले रिश्तों की मिठास थी,
अब वाई–फाई की तलाश है।
पहले यादें बनती थीं हर शाम,
अब फोटो खींचना ही रह गया काम।

Special Help Fund for treatement of Mr. Saurabh Nasik

Sl. No.	Name	Place	Amount
1	Padam Chaturvedi	Lucknow	1000
2	Pankaj Chaturvedi	Mumbai	10000
3	Jitendra Chaturvedi-	Bhopal	5000
4	Mukesh Chaturvedi	Gwaior	5100
5	Uma Chaturvedi		1000
6	Surabhi Chaturvedi		1000
7	Keshav Kant Chaturvedi		1000
8	Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha , Executive body	Lucknow	17902
9	Jayendra Chaturvedi		1001
10	Anand Vardhan Chaturvedi	Noida	500
11	Avanish Chaturvedi	Kota	1100
12	Neeta Manoj Chaturvedi	Sagar	2000
13	Rakesh Chaturvedi		1000
14	Sudarshan Lal Chaturvedi	Kota	1100
15	Abhay Chaturvedi	Bhopal	1000
16	Laxmi Kumar Chaturvedi		2000
17	Priyanka Chaturvedi		2100
18	Nitin Chaturvedi	Kota	1000
19	Munindra Nath Chaturvedi	Noida	1000
20	Braj Nandan Chaturvedi	Kota	1100
21	Shri Mathur Chaturvedi Sabha	Kota	11000
22	Rakesh Chaturvedi	Lucknow	2000
23			
	Total		**69903**

व्यवसाय एवं उद्योग

- डॉ. अजय चैबे, भोपाल

सभी बंधुओं को पालगन....... पूर्व में आपको अपना व्यवसाय/उद्योग स्थापित करने के विभिन्न चरणों के बारे में विस्तार से बताया गया था, आशा है आप सभी उससे लाभान्वित हुए होंगे। आगे के अंकों में आपको उद्योगों के प्रोजेक्ट प्रोफाइल के बारे में जानकारी दी जाएगी जो कि समाज के उद्यमियों के लिए लाभदायक हैं और इनके द्वारा महिलाएं एव पुरुष सभी अपना व्यवसाय शुरू करने में लाभान्वित हो सकते हैं..... क्योंकि प्रोफाइल्स तकनीकी भाषा में होने के कारण अंग्रेजी में देना सुविधाजनक है ,ये प्रोफाइल सरल अंग्रजी भाषा में है जो की समाज के उद्यमी बंधु समझ सकते हैं।

chilli pickle

Introduction : Pickles are very popular across the country and they are regularly consumed by almost all households. Restaurants, dhabas, caterers etc. are bulk consumers. There are many varieties of pickles with certain regional specialities as well. They are generally spicy but some are sweet also. They are table enrichers.

Project description

Capacity of the Project

The rated capacity of the chilli pickle unit is 110 Tonnes per year.

Project component and cost

Major components of the projects and their costs are described in the table hereunder:

PARTICULARS	Unit	Qty	Cost/unit	Total
LAND & BUILDING				**8.38**
Land	SqM	600	250.00	1.50
Land Development				
Land Area		600	500.00	3.00
Building				
Production Block				
Main Production Area	SqM	200	5,000.00	10.00
Store cum packing room & Sales Counter	SqM	50	5,000.00	2.50
Misc Handling Area	SqM	150	2,000.00	3.00
Contingencies		10%		1.55
PLANT & MACHINERY				**6.00**
Plant & Machinery	LS	1	500,000	5.00
Contingencies		20%		1.00
MISCELLANEOUS FIXED ASSETS				**1.80**
Misc. Plant and machinery	LS	1	150,000	1.50
Contingencies		20%		0.30
PRE-OPERATIVE EXPENSES				**7.10**
Establishment		1	450,000	4.50
Professional Charges		1	100,000	1.00
Security Deposits		1	160,000	1.60
TOTAL				**36.45**

Working capital assessment

ITEMS	Year 1	Year 3	Year 5
STOCK OF RAW MATERIAL & PACKING MATERIAL	4.58	5.89	5.89
SUNDRY DEBTORS	13.86	17.82	17.82
TOTAL	18.44	23.71	23.71
MARGIN	4.61	5.93	5.93
MPBF	13.83	17.78	17.78
INTEREST ON WC	1.52	1.96	1.96

Means of finance

EQUITY CAPITAL			25.00%	9.82
MOFPI SUBSIDY	25%	50.00	25.00%	9.82
TERM LOAN				
FINANANCIAL INSTITUTIONS		10.00%	50.00%	19.63
-Payable half yearly Installments	10	2.00		
TOTAL			100%	39.26

Projected profit and loss account

Particulars	Year 1	Year 3	Year 5	Year 7
INCOME	46.20	59.40	59.40	59.40
EXPENDITURE	39.48	48.44	49.36	50.30
VARIABLE	27.38	34.54	34.35	34.16
FIXED	12.10	13.90	15.02	16.14
GROSS PROFIT	6.72	10.96	10.04	9.10
PROFIT BEFORE TAX	0.74	5.28	5.20	4.74
RETAINED PROFIT	0.74	5.28	5.20	4.74

इच्छुक पाठक पूर्ण विवरण के लिए ई-मेल nikitachaturvedi17@gmail.com पर संपर्क करे।

समाज समाचार

■ सुश्री दिव्या चतुर्वेदी पुत्री श्री निखिल चतुर्वेदी (फिरोजाबाद/प्रयागराज) ने आईसीएससी बोर्ड हाईस्कूल परीक्षा 92.2 प्रतिशत अंकों से सैंट मैरी कान्वेंट इंटर कालेज से उत्तीर्ण होने पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 1100 रुपये प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.202651)

■ श्रीमती कस्तूरी चतुर्वेदी की पुण्यतिथि दिनांक 4 जून 2026 के अवसर पर उनके पति श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (सिकंदरपुर खास/भोपाल) ने अन्नपूर्णा सहायतार्थ 5100/- रुपये प्रदान किए।(र.क्र.202662)

■ स्व. धनेश चंद्र जी, स्व. जनकसुता जी व स्व. अजय जी की स्मृति में पूनम - प्रणव चतुर्वेदी (मैनपुरी/गुरुग्राम) द्वारा 3100/- प्रदान किये। (र.क्र.-202636)

■ श्री संजय मिश्रा जी (कानपुर) की पुत्रवधू डॉ. अपर्णा जी पत्नी चि. शुभम (नोयडा) को दिनाँक 25 मई 2026 गंगा दशहरा के अवसर पर पुत्र रत्न की प्राप्ति पर बधाई।(र.क्र.-202633)

■ विशाल जी,दानपुर के द्वारा महासभा कीअन्नपूर्णा योजना सहयोगार्थ 1100/- की राशि प्रदान की गई। (र.क्र.202635)

■ स्व.राकेश जी की स्मृति में श्री अनुज जी (बिजकौली/गाज़ियाबाद) ने12000/- अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किये। (र.क्र.202649)

■ श्रीमती कस्तूरी चतुर्वेदी की पुण्यतिथि दिनांक 4 जून 2026 के अवसर पर उनके पति श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (सिकंदरपुर खास/भोपाल) ने अन्नपूर्णा सहायतार्थ 5100/- रुपये प्रदान किए।

■ प्रो.ओ.पी. चतुर्वेदी (भोपाल) के 100 वें जन्मदिवस 22.06.2026 पर चि.सौरभ, गौरव एवं समर्थ द्वारा अन्नपूर्णा निधि में 5100 रुपये प्रेषित किए। (र.क्र.202650)

बिछड़े स्वजन

* श्री भूषण चतुर्वेदी,बब्बी (होलीपुरा/कानपुर) का दिनाँक 28 मई 2026 को कानपुर में निधन हो गया।
* श्रीमती शकुंतला चतुर्वेदी पत्नी स्व गंगाप्रसाद जी (कानपुर/आगरा/मुंबई) का दिनाँक 28 मई 2026 को 96 वर्ष की आयु में अपने बेटे अभय जी के पास कांदिवली,मुम्बई में निधन हो गया।
* श्रीमती मिथलेश चतुर्वेदी पत्नी स्व. जगदीश चतुर्वेदी (कच्चे घर) (मिश्राना,मैनपुरी) का 29 मई 2026 को पूना में अपने बड़े पुत्र श्री राजीव जी (राजो) के पास निधन हो गया।
* श्रीमती विभा चतुर्वेदी पत्नी श्री विवेक जी पुत्रवधू स्व. प्रभात जी, (इटावा) का स्वर्गवास लगभग 49 वर्ष की आयु में दिनाँक 28 मई 2026 को हो गया।
* श्रीमती राजश्री चतुर्वेदी पत्नी श्री अरविन्द चतुर्वेदी (मैनपुरी/नोएडा) का निधन दिनाँक 3 जून 2026 को हो गया।
* श्रीमती राजेश्वरी चतुर्वेदी पत्नी हृदय चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोटा) का स्वर्गवास हो गया।
* श्रीमती शशि जी पत्नी स्व. शैलनाथ जी (इटावा/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 4 जून 2026 की रात्रि को 89 वर्ष की उम्र में अपने पुत्र अरविंद के पास लखनऊ में हो गया।
* श्रीमती महिमा चतुर्वेदी जी पत्नी श्री प्रशांत चतुर्वेदी (फर्रुखाबाद/भोपाल) का स्वर्गवास दिनाँक 10 जून 2026 को भोपाल में हो गया।
* श्री अमिताभ चतुर्वेदी 'राम' पुत्र स्व. मुरलीधर जी (उचाड़/ग्वालियर) का स्वर्गवास 54 वर्ष की आयु में दिनाँक 13 जून 2026 को हो गया।
* श्री अनिल चतुर्वेदी "नीलमणि" सुपुत्र स्व. कैलाश चंद्र चतुर्वेदी (पुरा/फिरोजाबाद) का स्वर्गवास 75 वर्ष की आयु में दिनाँक 19 जून 2026 को फिरोजाबाद में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

प्रथम पुण्यतिथि

पूरा साल बीत गया आपकी स्नेहिल स्मृतियों के बीच ......

परम श्रद्धेय अशोक नारायण चतुर्वेदी

सुपुत्र कीर्ति शेष शिवदत्त चतुर्वेदी कीर्ति शेष श्रीमती उत्तम चतुर्वेदी

(हथकांत/इटावा)

जन्म
31.08.1953

निर्वाण
08.08.2025

अत्यंत सहज, सरल, सौम्य, निश्छल, निष्पाप आपका प्रेरक व्यक्तित्व हम सबका आदर्श पथ है।
प्रथम पुण्य तिथि पर सादर प्रणाम स्वीकारें।

...........कृतज्ञ परिजन

03 रंगरेजन टोला**,** छिपेटी**,** इटावा उत्तर प्रदेश

(र.क्र. 202686)

प्रथम पुण्यतिथि

"बीहड़ में दीप जले, कर्म से बना प्रकाश।
पिता सम गुरु मिले, जीवन बना सुवास।"

पूज्यनीय पिताजी की प्रथम पुण्यतिथि पर हृदय में उमड़ती भावनाओं के साथ आप सहित सभी पूर्वजों को हम ह्दय के गहन तल से सादर नमन और अश्रु पूरित श्रद्धांजलि समर्पित करते है।

अपने शासकीय सेवा-काल में अनेकों आयाम और कीर्तिस्तंभ स्थापित करने वाले, नैतिक संदेश देने वाले परम पूज्यनीय स्मृतिशेष श्री प्रकाश चन्द्र जी चतुर्वेदी (तरसोखर/झाँसी) के दिनांक 28.07.2025 को हुए आकस्मिक देहावसान से सम्पूर्ण परिवार को अपूरणीय क्षति हुई है। आप जैसा अद्वितीय व्यक्तित्व हम सभी के लिए अनुकरणीय है। एक अत्यंत सामान्य परिवार में, चम्बल के बीहड़ों में, एक छोटे से गाँव में जन्म लेकर उन्होंने अत्यंत विषम परिस्थितियों एवम संघर्षों में जीवन यात्रा प्रारंभ की, दस्यु-प्रभावित क्षेत्र में अनेक कठिनाइयों और अभावों के बीच संघर्ष करते हुए शिक्षा प्राप्त करना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि थी। जीवनभर संघर्षो और चुनौतियों से जूझते रहने पर भी, कभी अपने सिद्धांतों, ईमान और आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया। अपने ज्ञान, कर्मठता और कठोर व्यक्तित्व के बूते उन्होंने भारतीय रेल में सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया। ऐसे व्यक्तित्व विरले ही होते हैं, जो सीमित संसाधनों की उपलब्धता के बावजूद अपने परिश्रम और चरित्र के बल पर सफलता के उत्कर्ष तक पहुँचते हैं। आप वास्तव में हमारे परिवार के विलक्षण रत्नों में से एक थे।

आपके सानिध्य में बिताया गया हर पल हम सभी के लिए अविस्मरणीय है— एक सफल अभिभावक के रूप में संवेदनशील पिता, कठोर प्रशिक्षक के रूप में आचार्य, और नैतिक मूल्यों के पालन के रूप में प्रामाणिक मार्गदर्शक के रूप में हमने आपको पाया। एक पिता के रूप में आपने परिवार को केवल भरण-पोषण और सुरक्षा ही नहीं दी, वरन सीमित संसाधनों के बावजूद भी शिक्षा, संस्कार, अनुशासन और परिश्रम का अमूल्य पाठ भी सिखाया। आपने अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अथक परिश्रम किया और जीवन की धूप-छाँव में परिवार का संबल बनकर खड़े रहे। आपका असीमित स्नेह, संरक्षण और मार्गदर्शन आज भी हमारे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। तठस्थ व्यवहार के साथ आत्मीयता आपका विशेष गुण था। आप हर आयु वर्ग के साथ इस प्रकार घुल-मिल जाते थे कि आपसे मिलने वाले का प्रत्येक क्षण अविस्मरणीय हो जाता था।

'दबंग' शब्द की सही अनुभूति हमें आपसे ही हुई।

आप विशिष्ट प्रशासक, व्यवहार -कुशल एवं सामाजिक व्यक्तित्व के धनी थे। मेरा सौभाग्य है कि मुझे उस अद्वितीय व्यवहार, गहन भावनाओं और उन्नत विचारों के धनी महान दिव्यात्मा और ज्ञान के वट-वृक्ष के रूप में आपका पितृत्व प्राप्त हुआ।

"हज़ारों साल नर्गिस अपनी बे-नूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में शेर दिल पैदा

स्मृति शेष स्व. श्री प्रकाश चंद्र चतुर्वेदी
सुपुत्र स्व. श्रीमती शान्ता देवी - स्व. श्री शम्भू नाथ चतुर्वेदी
(तरसोखर/झाँसी)

जन्म : 20-02-1943
पंचतत्व विलीन : 28-07-2025

आपका जीवन हमें सदैव प्रेरित करता रहेगा कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य, परिश्रम और दृढ़ संकल्प के साथ सफलता प्राप्त की जा सकती है। आपके आदर्श, आपके संस्कार और आपकी स्मृतियाँ सदैव हमारे हृदय में प्रस्फुटित होती रहेंगी। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें तथा हमें उनके निर्देशित मार्ग पर चलने की शक्ति दें।

II ॐ शान्ति शान्ति II

श्रद्धावनत

पत्नी - श्रीमती आशा चतुर्वेदी
पुत्र-पुत्रवधू - एड.पुष्पेंद्र चतुर्वेदी-श्रीमती मेघा, विकास चतुर्वेदी-श्रीमती गुँजन
पुत्री-दामाद - डॉ.गौरव चतुर्वेदी-श्रीमती दीपा
(दोहित्री व पौत्र/पौत्री)- पूर्वा, मौलश्री, लग्नेश, खनक

(र.क्र. 202685)

प्रथम पुण्यतिथि

भगवद्गीता (अध्याय 2, श्लोक 23)

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न अग्नि जला सकती है;
न जल उसे भिगो सकता है और न वायु उसे सुखा सकती है।

श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी चतुर्वेदी

6 अक्टूबर 1943 - 27 जुलाई 2025

हम आज भी आपके स्नेहिल स्पर्श, आपकी मधुर मुस्कान और उस अथाह ममता को याद करते हैं जिसने हमारे जीवन को प्रेम और सुरक्षा का आधार दिया। आपने हमें केवल जीवन ही नहीं दिया, बल्कि ऐसे संस्कार और मूल्य भी दिए जो हर परिस्थिति में हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

इन अमूल्य संस्कारों, जीवन मूल्यों और अदम्य साहस की विरासत के लिए हम आपके हृदय से कृतज्ञ हैं।

आप सदैव हमारी स्मृतियों, हमारे विचारों और हमारे हृदय में जीवित रहेंगी।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि एवं शत्-शत् नमन।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सादर श्रद्धांजलि

प्रीति -पीयूष , जयेन्द्र-रुचिता , कीर्ति-संदीप , दीप्ति-अनूप , हिमांशु-अंजलि
सृष्टि -साहिल , सुरभि , मयूरी , सौम्या , आयुषि , काश्वी ,
श्रुति , कुंशबद्री , सव्यसांची एवं नन्ही रैनिका

(र.क्र. 202678)

ॐ

स्वर्गीय श्री भरत चतुर्वेदी जी

जन्म : 04 07 1956 स्वर्गवास : 31 05 2026

हमेशा दिल में रहोगे.....

अबाध गति से दौड़ता समय रुकता नहीं और ना ही लौटकर आता है। कब समय बीतता जाता है जीवन की भागदौड़ में पता ही नहीं चलता। हमारे पूजनीय पिताजी श्री भरत चतुर्वेदी जी, सिकंदरपुर निवासी श्री वीरेन्द्र चतुर्वेदी जी के सुपुत्र, झाँसी में जन्मे, हमें छोड़कर चले गए। इतनी जल्दी समय बीत गया, पता ही नहीं चला। ऐसा लगता है कि आज भी वे हमारे साथ हैं, हम से बात कर रहे हैं, हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। लेकिन उनके बिना जो स्थान रिक्त हो गया है उसको भर पाना बहुत ही मुश्किल है। वे एक दयालु हृदय, जीवन से भरपूर और ईश्वर में अटूट आस्था रखने वाले इंसान थे। अच्छाई और भलाई उनके जीवन का मूल मंत्र था। हर पल वे हमारी स्मृतियों में साथ रहते हैं। हम उनके बताए मार्ग पर सदैव चलते रहेंगे और उनके स्वप्न पूरे करने का सदैव प्रयास करते रहेंगे। उनका आशीर्वाद हमें प्राप्त होता रहे। वे जहाँ भी हैं ईश्वर उन्हें शांति प्रदान करें।

उनके पुण्य चरणों में प्रणाम।

ॐ शांति

पियूष चतुर्वेदी (पुत्र) एवं नेहा चतुर्वेदी (पुत्रवधू) | पुनीत चतुर्वेदी (पुत्र) एवं चारु चतुर्वेदी (पुत्रवधू)

पूजा चतुर्वेदी (पुत्री) एवं अभिषेक चतुर्वेदी (दामाद)

दिव्यांशी चतुर्वेदी, आयुष्मान चतुर्वेदी, अर्णव चतुर्वेदी, अर्पित चतुर्वेदी (पौत्र-पौत्री)

पता : अयोध्या नगर, भोपाल | मो. नं. : 72597 70639

II ॐ शांति II

(र.क्र. 202669)

The Late Colonel Anand and Dr Mrs Beena Chaturvedi

(Son of The Late Mahesh Kumar And Smt Satyavati And Daughter of the Late Shri Nawal Kishore and Smt Gomati Devi)

WE ALL MISS YOU SO MUCH

1 July 1941 – 8 March 2026; November 1941 – 9 November 2013

Son, Daughter in law, Daughters and Sons in law with children

Col. Gaurav and Smt. Sumati

Smt. Smita and Brig. Ranjan

Smt. Astha and Shri Chandrashekhar

Smt. Anshu and Shri Ganesh

Madhav, Capt. Rajat, Rohan, Adi and Maya

Brothers, Sisters in law, Sister, Brother in law

Col. Arvind and Smt. Shashi.

Dr. Mrs. Noopur - Rajat, Reyan, Rishan.

Mr. Madhur, Smt. Pooja, Kashwi.

Dr. Mrs. Maryse Govind, Cyril, Eric and Mrs. Zenyp & children. (France)

Major Sunand and Smt. Rekha,

Mrs. Subhasini and Colonel Parker, Vivian Lily

Mrs. Anuradha Mr. Brandon Fetters, Calyx and Cooper (USA)

Smt. Nandini and Shri Madhukar,

Smt. Nandita and Shri Nitish, Navi

Smt. Malvika and Shri Ashish, Navika.

Dr. Smt. Abha Yashovijay Smt. Manjari And Shri Ayush

And the entire Prof SS Chaturvedi 's (Kamatari/ Agra) family

(र.क्र. 202646)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' जुलाई 2026

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak2024.chandrika@gmail.com

श्रद्धांजली

स्व. श्री अनिल चतुर्वेदी "नीलमणि"

सुपुत्र : स्व. कैलाश चंद्र चतुर्वेदी (पुरा/फिरोजाबाद)
पूर्व महासभा कार्यकारिणी सदस्य

श्रद्धावनत

सभापति :- श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल

उप-सभापति :- श्री मुनीन्द्र नाथ (नोयडा), श्री पंकज (मुम्बई), श्रीमती आभा (नागपुर), डा. कुश (इटावा), श्री विनोद (गुरूग्राम), श्री सुमंत (आगरा), श्री अंशुमान (जयपुर)

सचिव :- श्री शशांक (भोपाल)

सह-सचिव :- श्री आशुतोष (कानपुर), श्री करूणेश (ग्वालियर), श्री गोविन्द (जयपुर), श्री अभयराज (गुरूग्राम), श्री मनीष (कोटा), श्रीमती बबीता (लखनऊ), श्री संजय (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष :- श्री ज्ञानेन्द्र (साहिबाबाद)

सम्पादक :- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र (गाजियाबाद)

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा